Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सतुति संग्रह

संकलनकर्त्ता:—
किशोरी लाल गुप्ता
(एम. ए., बी. एड़.)

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Honouring the Author on his birthday on 18-11-2020 by Sh. S K Jain Yoga Commissioner in the office of scouts and guides Gandhi Nagar, Jammu.

Releasing 2nd Book of Author 'Anmol Kathan-2' in the Scouts and Guides Hall Gandhi Nagar, Jammu by prominent journalist Sh. Sohail Qazmi and others on 07-01-2020.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्तुति संग्रह

अनुराग पूर्ण स्मृति के साथ

अपनी पत्नी स्व. श्रीमति विजय गुप्ता

6-3-1953 - 9-2-2005

एवं

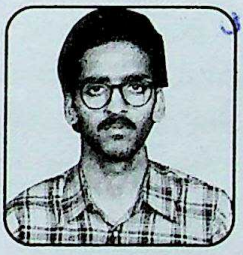

J.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No. 5321
Dated 29/3/21

सुपुत्र स्व. नीरज गुप्ता

20-11-1980 - 17-9-2001

5321

को समर्पित

संकलनकर्त्ता :-

किशोरी लाल गुप्ता (एम. ए. बी. एड.)

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्तुति संग्रह

प्रथम संस्करण : मार्च 2021

मूल्य : 150.00 रुपये

टाईपसैटिंग :
हरजीत कुमार थाप्पा
मो० 9149957321

अम्बे प्रिंटिंग प्रैस, गंग्याल, जम्मू
मो० 9419142528, 9419236955

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

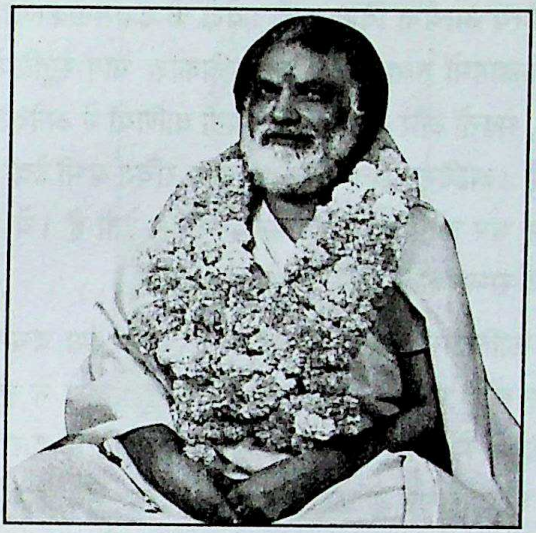

शुभाशंसा

स्तुतिं देवं प्रसन्नं भवति

आराधना हमारा उत्थान करती है और हमें आशीष प्रदान करती है। देव, गन्धर्व, किन्नर यहां तक कि संसार का प्रत्येक मनुष्य स्तुति से प्रसन्न होता है। भक्त और उनके आराध्य का परस्पर नित्य सम्बन्ध है । भक्तों की भावना के अनुसार भगवान उनके सर्वविधि मंगल के लिये सगुण साकार रूप में प्रकट होते हैं और अनिर्वचनीय होते हुए भी वे भक्तों की वाणी का विषय बन जाते हैं ।

उपासना में मन्त्र जप, नामजप, ध्यान, कवच, पटल, पद्धति, हृदय, स्तोत्र, शतनाम, सहस्रनाम, इत्यादि अनेक उपाय बताये गये हैं तथापि आराध्य के समक्ष आत्मनिवेदन का सर्वसुलभ और सरल साधन स्तुति या स्तोत्रपाठ बताया गया है । यद्यपि परमात्मा के सम्पूर्ण गुणों का वर्णन करना किसी भी जीव के वश की बात नहीं है, परन्तु प्रार्थना के माध्यम से भगवान के गुणों का वर्णन करने से व्यक्ति का अन्तः करण शुद्ध हो जाता है तथा उसका मन और वाणी भी पवित्र हो जाते हैं, इसलिये सर्वगुण सम्पन्न प्रभु ही वास्तविक स्तुति के अधिकार अपने भक्तों पर अति शीघ्र द्रवित होते हैं और आराधक कृतकृत्य हो जाता है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्तुति साहित्य अत्यन्त विशाल है । वेदों के उपासनाकाण्ड में स्तुति की प्रधानता है । तन्त्रागमों तथा पुराणों का अधिकांश भाग स्तुतियों से ही भरा पड़ा है । सन्तों, भक्तों और आचार्यों ने अपनी वाणियों में अनेकानेक स्तुतियों की रचना की है । आदिगुरु शंकराचार्य जी द्वारा रचित सभी देवी देवताओं की स्तुतियाँ तो तन मन को विभोर कर मन्त्रमुग्ध कर देती हैं । ये भगवान और भक्त के यथार्थ सम्बन्ध का बोध कराने वाली हैं ।

महाकवि कालिदास के 'स्तोत्रं कस्य न तुष्टये' इस वचन के अनुसार विश्व में ऐसा कोई प्राणी नहीं है, जो स्तुति से प्रसन्न न हो जाता हो । राजनीति के ग्रन्थों में कहा गया है कि साम या स्तुति के द्वारा राक्षस आदि भयंकर सत्त्व भी वशीभूत हो जाते हैं इसलिये दण्ड, भेद, दान आदि नीतियों से साम या स्तुति–प्रशंसा को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है ।

श्री किशोरी लाल गुप्ता जी द्वारा संकलित स्तुति संग्रह में अनेक मनभावन और प्रचलित स्तुतियों का संग्रह कर पुस्तक रूप में प्रकाशित करना सुन्दर, सार्थक एवं स्तुत्य प्रयास है । अर्थसहित स्तुतियों का पाठ साधकों को आनन्द की अनुभूति देने वाला होगा ।

इसके साथ–साथ अनेक सुन्दर सूक्तियां और महापुरुषों के वचन प्रेरणादायी बनेंगे । मेरी ओर से उन्हें इस स्तुत्य व लोक कल्याणकारी कार्य के लिये साधुवाद व शुभकामनायें ।

स्वामी हृदयानन्द गिरि
मो0 : 9419191514
7889592588

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निवेदन

महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित महाकाव्य ''रामचरितमानस'' के विभिन्न काण्ड़ों के पृष्ठों पर मुक्ति प्रदायनी अनके स्तुतियाँ संकलित हैं ।

उन्हीं स्तुतियों को संग्रहित करके इस लघु पुस्तिका का संकलन किया गया है। इस ज्ञानामृत के फल का रसास्वादन पा कर पाप–ताप से पीड़ित मानव–जाति का कल्याण स्वाभाविक ही हो जायेगा । और पापी से पापी प्राणी भी भवसागर से तरने में समर्थ सिद्ध होगा ।

मैंने अपनी ओर से भरस्क प्रयास किया है कि पाठकों को इस सत्कर्मशास्त्र के पठन और मनन से विशेष लाभ प्राप्त हो तथा वे अपने जीवन की सफलता और सार्थकता प्राप्ती में समर्थ हों ।

के. एल. गुप्ता
एम. ए. बी. एड
मो. : 9419236401
9149484659

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय सूची

क्रम सं0	विषय	पृष्ठ
1.	ब्रह्मा जी द्वारा भगवान विष्णु की स्तुति	01
2.	रामावतार	03
3.	अहल्या द्वारा भगवान राम की स्तुति	05
4.	परशुराम जी द्वारा राम जी की स्तुति	07
5.	अत्रि मुनि जी द्वारा प्रभु राम जी की स्तुति	09
6.	मुनि सुतीक्षण द्वारा प्रभु श्रीराम जी की स्तुति	13
7.	गीधराज जटायु द्वारा प्रभु राम जी की स्तुति	17
8.	ब्रह्मा जी द्वारा प्रभु श्रीराम जी की स्तुति	19
9.	देवराज इन्द्र द्वारा प्रभु श्रीराम जी की स्तुति	23
10.	त्रिपुरारि शिवजी द्वारा श्रीराम जी की स्तुति	25
11.	चार वेदों द्वारा प्रभु श्रीराम जी का गुणगान	27
12.	भगवान शिव द्वारा प्रभु श्रीराम जी की स्तुति	29
13.	सनकादि मुनियों द्वारा प्रभु श्रीराम जी की स्तुति	33
14.	नारद मुनि द्वारा प्रभु श्रीराम जी का कीर्तिगान	37
15.	ब्राह्मण द्वारा शिव स्तुति	39
16.	श्रीराम स्तुति	41
17.	श्रीराम वन्दना	42
18.	श्री हनुमान चालीसा	43
19.	संकटमोचन हनुमानाष्टक	45
20.	बजरंग बाण	47
21.	श्रीहनुमत् स्तवन	49
22.	श्रीहनुमान जी की आरती	50
23.	शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्	50
24.	प्रेरणा पुञ्ज	51
25.	Brilliant Thoughts	89

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्तुति संग्रह

K.L. Gupta

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Collection Bantalab Jammu

ब्रह्माजी द्वारा भगवान विष्णु की स्तुति

छं०— जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता ।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता ।।
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई ।।

जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा ।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ।।
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनिबृंदा ।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ।।

जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ।।
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा ।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा ।।

सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना ।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ।।
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

हे देवताओंके स्वामी, सेवकोंको सुख देनेवाले, शरणागतकी रक्षा करनेवाले भगवान् ! आपकी जय हो ! जय हो !! हे गो–ब्राह्मणोंका हित करनेवाले, असुरोंका विनाश करनेवाले, समुद्रकी कन्या (श्रीलक्ष्मीजी) के प्रिय स्वामी ! आपकी जय हो ! हे देवता और पृथ्वीका पालन करनेवाले ! आपकी लीला अद्भुत है, उसका भेद कोई नहीं जानता । ऐसे जो स्वभावसे ही कृपालु और दीनदयालु हैं, वे ही हमपर कृपा करें ।।२।।

हे अविनाशी, सबके हृदयमें निवास करनेवाले (अन्तर्यामी), सर्वव्यापक परम आनन्दस्वरूप, अज्ञेय, इन्द्रियोंसे परे, पवित्रचरित्र, माया से रहित मुकुन्द (मोक्षदाता) ! आपकी जय हो ! जय हो !! (इस लोक और परलोकके सब भोगोंसे) विरक्त तथा मोहसे सर्वथा छूटे हुए (ज्ञानी) मुनिवृन्द भी अत्यन्त अनुरागी (प्रेमी) बनकर जिनका रात–दिन ध्यान करते हैं और जिनके गुणोंके समूहका गान करते हैं, उन सच्चिदानन्दकी जय हो ।।२।।

जिन्होंने बिना किसी दूसरे संगी अथवा सहायकके अकेले ही (या स्वयं अपनेको त्रिगुणरूप–ब्रह्मा, विष्णु, शिवरूप–बनाकर अथवा बिना किसी उपादान–कारणके अर्थात् स्वयं ही सृष्टिका अभिन्ननिमित्तोपादान कारण बनकर) तीन प्रकारकी सृष्टि उत्पन्न की, वे पापों का नाश करनेवाले भगवान् हमारी सुधि लें। हम न भक्ति जानते हैं, न पूजा। जो संसारके (जन्म–मृत्युके) भयका नाश करनेवाले, मुनियोंके मनको आनन्द देनेवाले और विपत्तियोंके समूहको नष्ट करनेवाले हैं । हम सब देवताओंके समूह मन, वचन और कर्मसे चतुराई करनेकी बात छोड़कर उन (भगवान्) की शरण (आये) हैं ।।३।।

सरस्वती, वेद शेषजी और सम्पूर्ण ऋषि कोई भी जिनको नहीं जानते, जिन्हें दीन प्रिय हैं, ऐसा वेद पुकारकर कहते हैं, वे ही श्रीभगवान् हमपर दया करें । हे संसाररूपी समुद्रके (मथनेके) लिये मन्दराचलरूप, सब प्रकारसे सुन्दर, गुणोंके धाम और सुखोंकी राशि नाथ ! आपके चरणकमलोंमें मुनि, सिद्ध और सारे देवता भयसे अत्यन्त व्याकुल होकर नमस्कार करते हैं ।।४।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Collection, Bantalab Jammu

श्रीरामावतार

छं०— भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ।।

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ।।
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ।।

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ।।

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ।।

दो० बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ।।२२२।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

दीनोंपर दया करनेवाले, कौसल्याजीके हितकारी कृपालु प्रभु प्रकट हुए । मुनियोंके मनको हरनेवाले उनके अद्भुत रूपका विचार करके माता हर्षसे भर गयी । नेत्रों को आनन्द देनेवाला मेघके समान श्यामशरीर था, चारों भुजाओंमें अपने (खास) आयुध (धारण किय हुए) थे, (दिव्य) आभूषण और वनमाला पहने थे, बड़े–बड़े नेत्र थे । इस प्रकार शोभाके समुद्र तथा खर राक्षसको मारनेवाले भगवान् प्रकट हुए ।।२।।

दोनों हाथ जोड़कर माता कहने लगी–हे अनन्त ! मैं किस प्रकार तुम्हारी स्तुति करूँ । वेद और पुराण तुमको माया, गुण और ज्ञानसे परे और परिमाणरहित बतलाते हैं । श्रुतियाँ और संतजन दया और सुखका समुद्र, सब गुणोंका धाम कहकर जिनका गान करते हैं, वही भक्तोंपर प्रेम करनेवाले लक्ष्मीपति भगवान् मेरे कल्याणके लिये प्रकट हुए हैं ।।२।।

वेद कहते हैं कि तुम्हारे प्रत्येक रोममें मायाके रचे हुए अनेकों ब्रह्माण्डोंके समूह (भरे) हैं । वे तुम मेरे गर्भमें रहे–इस हँसीकी बातके सुननेपर धीर (विवेकी) पुरुषोंकी बुद्धि भी स्थिर नहीं रहती (विचलित हो जाती है)। जब माताको ज्ञान उत्पन्न हुआ, तब प्रभु मुसकराये। वे बहुत प्रकारके चरित्र करना चाहते हैं। अत: उन्होंने (पूर्वजन्मकी) सुन्दर कथा कहकर माताको समझाया, जिससे उन्हें पुत्रका (वात्सल्य) प्रेम प्राप्त हो (भगवान्‌के प्रति पुत्रभाव हो जाय) ।।३।।

माताकी वह बुद्धि बदल गयी, तब वह फिर बोली–हे तात ! यह रूप छोड़कर अत्यन्त प्रिय बाललीला करो, (मेरे लिये) यह सुख परम अनुपम होगा । (माताका) यह वचन सुनकर देवताओंके स्वामी सुजान भगवान्‌ने बालक (रूप) होकर रोना शुरू कर दिया । (तुलसीदासजी कहते हैं–) जो इस चरित्रका गान करते हैं, वे श्रीहरिका पद पाते हैं और (फिर) संसाररूपी कूपमें नहीं गिरते ।।४।।

ब्राह्मण, गौ, देवता और संतोंके लिये भगवान्‌ने मनुष्यका अवतार लिया । वे (अज्ञानमयी, मलिना) माया और उसके गुण (सत्, रज, तम) और (बाहरी तथा भीतरी) इन्द्रियोंसे परे हैं । उनका (दिव्य) शरीर अपनी इच्छासे ही बना है (किसी कर्मबन्धनसे परवश होकर त्रिगुणात्मक भौतिक पदार्थों के द्वारा नहीं) ।।२२२।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Collection, Bantalab Jammu

अहल्या द्वारा भगवान राम की स्तुति

छं०— धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई ।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई ।।
मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई ।
राजीव बिलोचन भव भ्य मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई ।।

मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना ।
देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहइ लाभ संकर जाना ।।
बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना ।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ।।

जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी ।
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी ।।
एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी ।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी ।।

दो० अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल ।
तुलसीदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

फिर उसने मनमें धीरज धरकर प्रभुको पहचाना और श्रीरघुनाथजीकी कृपासे भक्ति प्राप्त की । तब अत्यन्त निर्मल वाणीसे उसने (इस प्रकार) स्तुति प्रारम्भ की—हे ज्ञानसे जानने योग्य श्रीरघुनाथजी ! आपकी जय हो ! मैं (सहज ही) अपवित्र स्त्री हूँ, और हे प्रभो ! आप जगत्‌को पवित्र करनेवाले, भक्तोंको सुख देनेवाले और रावणके शत्रु हैं । हे कमलनयन ! हे संसार (जन्म—मृत्यु) के भयसे छुड़ानेवाले ! मैं आपकी शरण आयी हूँ, (मेरी) रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये ।।२।।

मुनिने जो शाप मुझे दिया, सो बहुत ही अच्छा किया । मैं उसे अत्यन्त अनुग्रह (करके) मानती हूँ, कि जिसके कारण मैंने संसारसे छुड़ानेवाले श्रीहरि (आप) को नेत्र भरकर देखा । इसी (आपके दर्शन) को शंकरजी सबसे बड़ा लाभ समझते हैं । हे प्रभो ! मैं बुद्धिकी बड़ी भोली हूँ, मेरी एक विनती है । हे नाथ ! मैं और कोई वर नहीं माँगती, केवल यही चाहती हूँ कि मेरा मनरूपी भौंरा आपके चरण—कमलकी रजके प्रेमरूपी रसका सदा पान करता रहे ।।३।।

जिन चरणोंसे परमपवित्र देवनदी गङ्गाजी प्रकट हुई, जिन्हें शिवजीने सिरपर धारण किया और जिन चरणकमलोंको ब्रह्माजी पूजते हैं, कृपालु हरि (आप) ने उन्हींको मेरे सिरपर रक्खा । इस प्रकार (स्तुति करती हुई) बार—बार भगवान्‌के चरणोंमें गिरकर, जो मनको बहुत ही अच्छा लगा, उस वरको पाकर गौतमकी स्त्री अहल्या आनन्दमें भरी हुई पतिलोकको चली गयी ।।४।।

प्रभु श्रीरामचन्द्रजी ऐसे दीनबन्धु और बिना ही कारण दया करनेवाले हैं । तुलसीदास कहते हैं, हे शठ (मन) ! तू कपट जंजाल छोड़कर उन्हींका भजन कर ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Digitized by eGangotri Bantalab Jammu

परशुरामजी द्वारा श्री राम जी की स्तुति

दो०— जाना राम प्रभाउ तब पुलक प्रफुल्लित गात ।
जोरि पानि बोले बचन हृदयँ न प्रेमु अमात ।।

जय रघुबंस बनज बन भानू । गहन दनुज कुल दहन कृसानू ।।
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी । जय मद मोह कोह भ्रम हारी ।।

बिनय सील करुना गुन सागर । जयति बचन रचना अति नागर ।।
सेवक सुखद सुभग सब अंगा । जय सरीर छबि कोटि अनंगा ।।

करौं काह मुख एक प्रसंसा । जय महेस मन मानस हंसा ।।
अनुचित बहुत कहेऊँ अग्याता । छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता ।।

कहि जय जय जय रघुकुलकेतू । भृगुपति गए बनहि तप हेतू ।।
अपभयँ कुटिल महीप डेराने । जहँ तहँ कायर गवँहिं पराने ।।

दो०— देवन्ह दीन्हीं दुंदुभीं प्रभु पर बरषहिं फूल ।
हरषे पुर नर नारि सब मिटी मोहमय सूल ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

तब उन्होंने (परशुराम जी ने) श्रीरामजीका प्रभाव जाना, (जिसके कारण) उनका शरीर पुलकित और प्रफुल्लित हो गया । वे हाथ जोड़कर वचन बोले—प्रेम उनके हृदयमें समाता न था — ।।

हे रघुकुलरूपी कमलवनके सूर्य ! हे राक्षसोंके कुलरूपी घने जंगलको जलानेवाले अग्नि ! आपकी जय हो ! हे देवता, ब्राह्मण और गौका हित करने वाले ! आपकी जय हो ! हे मद, मोह, क्रोध और भ्रमके हरनेवाले ! आपकी जय हो ।।२।।

हे विनय, शील, कृपा आदि गुणोंके समुद्र और वचनोंकी रचनामें अत्यन्त चतुर ! आपकी जय हो । हे सेवकोंको सुख देनेवाले, सब अङ्गोंसे सुन्दर और शरीरमें करोड़ों कामदेवोंकी छबि धारण करनेवाले ! आपकी जय हो ।।२।।

मैं एक मुख से आपकी क्या प्रशंसा करुँ ? हे महादेवजी के मनरूपी मानसरोवर के हंस । आपकी जय हो। मैंने अनजाने में आपको बहुत से अनुचित वचन कहे । हे क्षमा के मन्दिर दोनों भाई ! मुझे क्षमा कीजिये ।।३।।

हे रघुकुलके पताकास्वरूप श्रीरामचन्द्रजी ! आपकी जय हो, जय हो, जय हो । ऐसा कहकर परशुरामजी तपके लिये वनको चले गये । (यह देखकर) दुष्ट राजालोग बिना ही कारणके (मनःकल्पित) डरसे (रामचन्द्रजीसे तो परशुरामजी भी हार गये, हमने इनका अपमान किया था, अब कहीं ये उसका बदला न लें, इस व्यर्थके डरसे) डर गये, वे कायर चुपकेसे जहाँ—तहाँ भाग गये ।।४।।

देवताओंने नगाड़े बजाये, वे प्रभुके ऊपर फूल बरसाने लगे । जनकपुरके स्त्री—पुरुष सब हर्षित हो गय । उनका मोहमय (अज्ञानसे उत्पन्न) शूल मिट गया ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अत्रि मुनि जी द्वारा प्रभु रामजी की स्तुति

छं०— नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ।
भजामि ते पदांबुजं । अकामिनां स्वधामदं ।।१।।

निकाम श्याम सुंदरं । भवांबुनाथ मंदरं ।
प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ।।२।।

प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवं ।
निषंग चाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ।।३।।

दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ।
मुनींद्र संत रंजनं । सुरारि वृंद भंजनं ।।४।।

मनोज वैरि वंदितं । अजादि देव सेवितं ।
विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दूषणापहं ।।५।।

नमामि इंदिरा पतिं । सुखाकरं सतां गतिं ।
भजे सशक्ति सानुजं । शची पति प्रियानुजं ।।६।।

त्वदंघ्रि मूल ये नराः । भजंति हीन मत्सराः ।
पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ।।७।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

हे भक्तवत्सल ! हे कृपालु ! हे कोमल स्वभाववाले ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ । निष्काम पुरुषोंको अपना परमधाम देनेवाले आपके चरणकमलों को मैं भजता हूँ ।।१।।

आप नितान्त सुन्दर श्याम संसार (आवागमन) रूपी समुद्रको मथनेके लिये मन्दराचलरूप, फूले हुए कमलके समान नेत्रोंवाले और मद आदि दोषों से छुड़ानेवाले हैं ।।२।।

हे प्रभो ! आपकी लंबी भुजाओंका पराक्रम और आपका ऐश्वर्य अप्रमेय (बुद्धिके परे अथवा असीम) है । आप तरकस और धनुष–बाण धारण करनेवाले तीनों लोकों के स्वामी ।।३।।

सूर्यवंशके भूषण, महादेवजीके धनुषको तोड़नेवाले, मुनिराजों और संतों को आनन्द देनेवाले तथा देवताओंके शत्रु असुरोंके समूहका नाश करनेवाले हैं ।।४।।

आप कामदेवके शत्रु महादेवजीके द्वारा वन्दित, ब्रह्मा आदि देवताओंसे सेवित, विशुद्ध ज्ञानमय विग्रह और समस्त दोषोंको नष्ट करनेवाले हैं ।।५।।

हे लक्ष्मीपते ! हे सुखोंकी खान और सत्पुरुषोंकी एकमात्र गति ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ । हे शचीपति (इन्द्र) के प्रिय छोटे भाई (वामनजी) ! स्वरूपा–शक्ति श्रीसीताजी और छोटे भाई लक्ष्मणजीसहित आपको मैं भजता हूँ ।।६।।

जो मनुष्य मत्सर (डाह) रहित होकर आपके चरणकमलोंका सेवन करते हैं, वे तर्क–वितर्क (अनेक प्रकारके संदेह) रूपी तरङ्गोंसे पूर्ण संसाररूपी समुद्रमें नहीं गिरते (आवागमनके चक्करमें नहीं पड़ते) ।।७।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विविक्त वासिनः सदा । भजंति मुक्तये मुदा ।
निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांति ते गतिं स्वकं ।।८।।

तमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुं ।
जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलं ।।२।।

भजामि भाव वल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्त कल्प पादपं । समं सुसेव्यमन्वहं ।।१०।।

अनूप रूप भूपतिं । नतोऽहमुर्विजा पतिं ।
प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ।।२२।।

पठंति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदं ।
व्रजंति नात्र संशयं । त्वदीय भक्ति संयुताः ।।२२।।

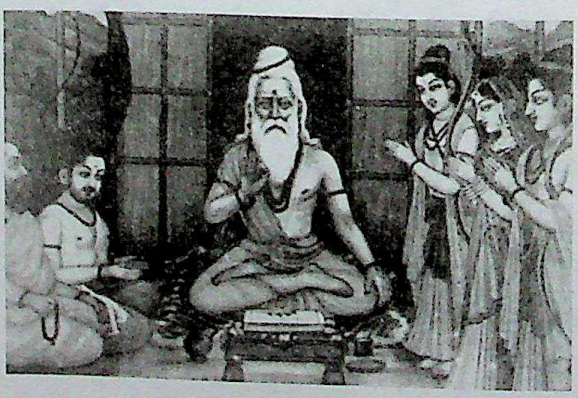

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

जो एकान्तवासी पुरुष मुक्तिके लिये, इन्द्रियादिका निग्रह करके (उन्हें विषयोंसे हटाकर) प्रसन्नतापूर्वक आपको भजते हैं, वे स्वकीय गतिको (अपने स्वरूपको) प्राप्त होते हैं ।।८।।

उन (आप) को जो एक (अद्वितीय), अद्भुत (मायिक जगत्से विलक्षण), प्रभु (सर्वसमर्थ), इच्छारहित, ईश्वर (सबके स्वामी), व्यापक, जगद्गुरु, सनातन (नित्य), तुरीय (तीनों गुणोंसे सर्वथा परे) और केवल (अपने स्वरूपमें स्थित) हैं ।।२।।

(तथा) जो भावप्रिय, कुयोगियों (विषयी पुरुषों) के लिये अत्यन्त दुर्लभ, अपने भक्तोंके लिये कल्पवृक्ष (अर्थात् उनकी समस्त कामनाओंको पूर्ण करनेवाले), सम (पक्षपातरहित) और सदा सुखपूर्वक सेवन करनेयोग्य हैं, मैं निरन्तर भजता हूँ ।।१०।।

हे अनुपम सुन्दर ! पृथ्वीपति ! हे जानकीनाथ ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ । मुझपर प्रसन्न होइये, मैं आपको नमस्कार करता हूँ । मुझे अपने चरणकमलोंकी भक्ति दीजिये ।।२२।।

जो मनुष्य इस स्तुतिको आदरपूर्वक पढ़ते हैं, वे आपकी भक्तिसे युक्त होकर आपके परमपदको प्राप्त होते हैं, इसमें संदेह नहीं ।।२२।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुनि सुतीक्ष्ण द्वारा प्रभु श्रीराम जी की स्तुति

कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी । अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी ।।
महिमा अमित मोरि मति थोरी । रबि सन्मुख खद्योत अँजोरी ।।

श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ।।
पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरंतर श्रीरघुवीरं ।।

मोह विपिन घन दहन कृशानुः । संत सरोरुह कानन भानुः।।
निसिचर करि वरूथ मृगराजः । त्रातु सदा नो भव खग बाजः।।

अरुण नयन राजीव सुवेशं । सीता नयन चकोर निशेशं ।।
हर हृदि मानस बाल मरालं । नौमि राम उर बाहु विशालं ।।

संशय सर्प ग्रसन उरगादः । शमन सुकर्कश तर्क विषादः ।।
भव भंजन रंजन सुर यूथः । त्रातु सदा नो कृपा वरूथः ।।

निर्गुण सगुण विषम सम रूपं । ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ।।
अमलमखिलमनवद्यमपारं । नौमि राम भंजन महि भारं ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

मुनि कहने लगे—हे प्रभो ! मेरी विनती सुनिये । मैं किस प्रकारसे आपकी स्तुति करूँ ? आपकी महिमा अपार है और मेरी बुद्धि अल्प है । जैसे सूर्यके सामने जुगनूका उजाला ! ।।१।।

हे नीलकमलकी मालाके समान श्याम शरीरवाले ! हे जटाओंका मुकुट और मुनियोंके (वल्कल) वस्त्र पहने हुए, हाथोंमें धनुष—बाण लिये तथा कमरमें तरकस कसे हुए श्रीरामजी ! मैं आपको निरन्तर नमस्कार करता हूँ ।।२।।

जो मोहरूपी घने वनको जलानेके लिये अग्नि हैं, संतरूपी कमलोंके वनके प्रफुल्लित करनेके लिये सूर्य हैं, राक्षसरूपी हाथियोंके समूहके पछाड़नेके लिये सिंह हैं और भव (आवागमन) रूपी पक्षीके मारनके लिये बाजरूप हैं, वे प्रभु सदा हमारी रक्षा करें ।।३।।

हे लाल कमलके समान नेत्र और सुन्दर वेषवाले ! सीताजीके नेत्ररूपी चकोरके चन्द्रमा, शिवजीके हृदयरूपी मानसरोवरके बालहंस, विशाल हृदय और भुजावाले श्रीरामचन्द्रजी ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ ।।४।।

जो संशयरूपी सर्पको ग्रसनेके लिये गरुड़ हैं, अत्यन्त कठोर तर्कसे उत्पन्न होनेवाले विषादका नाश करनेवाले हैं, आवागमनको मिटानेवाले और देवताओंके समूहको आनन्द देनेवाले हैं, वे कृपाके समूह श्रीरामजी सदा हमारी रक्षा करें ।।५।।

हे निर्गुण, सगुण, विषम और समरूप ! हे ज्ञान, वाणी और इन्द्रियोंसे अतीत ! हे अनुपम, निर्मल, सम्पूर्ण दोषरहित, अनन्त एवं पृथ्वीका भार उतारनेवाले श्रीरामचन्द्रजी ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ ।।६।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भक्त कल्पपादप आरामः । तर्जन क्रोध लोभ मद कामः ।।
अति नागर भव सागर सेतुः । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः ।।

अतुलित भुज प्रताप बल धामः । कलि मल विपुल विभंजन नामः।।
धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः । संतत शं तनोतु मम रामः ।।

जदपि बिरज ब्यापक अबिनासी । सब के हृदयँ निरंतर बासी ।।
तदपि अनुज श्री सहित खरारी । बसहु मनसि मम कानन चारी ।।

जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ।।
जो कोसलपति राजिव नयना । करउ सो राम हृदय मम अयना ।।

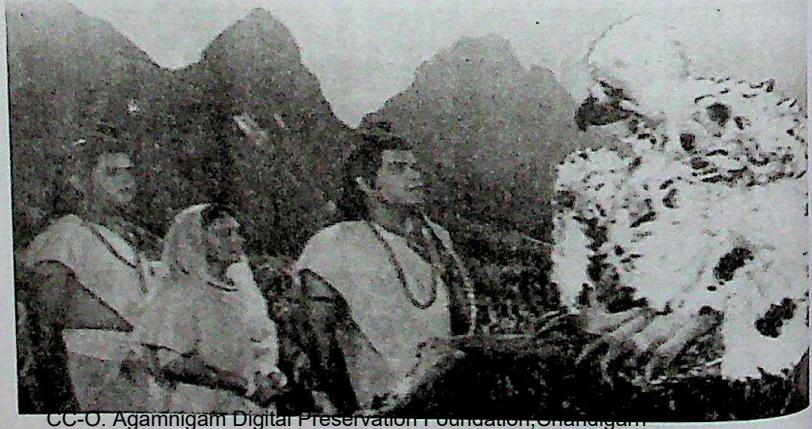

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

जो भक्तोंके लिये कल्पवृक्षके बगीचे हैं, क्रोध, लोभ, मद और कामको डरानेवाले हैं, अत्यन्त ही चतुर और संसाररूपी समुद्रसे तरनेके लिये सेतुरूप हैं, वे सूर्यकुलकी ध्वजा श्रीरामजी सदा मेरी रक्षा करें ।।७।।

जिनकी भुजाओंका प्रताप अतुलनीय है, जो बलके धाम हैं, जिनका नाम कलियुगके बड़े भारी पापोंका नाश करनेवाला है, जो धर्मके कवच (रक्षक) हैं और जिनके गुणसमूह आनन्द देनेवाले हैं, वे श्रीरामजी निरन्तर मेरे कल्याणका विस्तार करें ।।८।।

यद्यपि आप निर्मल, व्यापक, अविनाशी और सबके हृदयमें निरन्तर निवास करनेवाले हैं, तथापि हे खरारि श्रीरामजी ! लक्ष्मणजी और सीताजीसहित वनमें विचरनेवाले आप इसी रूपमें मेरे हृदयमें निवास कीजिये ।।२।।

हे स्वामी ! आपको जो सगुण, निगुर्ण और अन्तर्यामी जानते हों, वे जाना करें, मेरे हृदयको तो कोसलपति कमलनयन श्रीरामजी ही अपना घर बनावें ।।२०।।

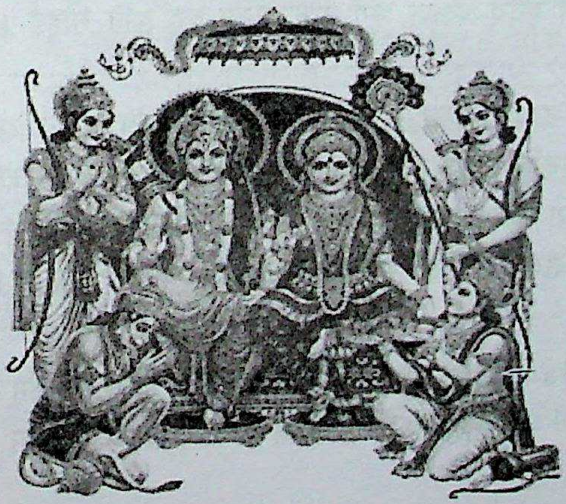

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीधराज जटायु द्वारा प्रभु राम जी की स्तुति

छं०— जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही ।
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही ।।
पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं ।
नित नौमि रामु कपाल बाहु बिसाल भव भय मोचनं ।।

बलमप्रमेयमनादिमजमब्यक्तमेकमगोचरं
गोबिंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधरं ।।
जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं ।
नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं ।।२।।

जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म व्यापक बिरज अज कहि गावहीं ।
करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं ।।
सो प्रगट करुना कंद सोभा बृंद अग जग मोहई ।
मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई ।।३।।

जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा ।
पस्यंति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा ।।
सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी ।
मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी ।।४।।

दो०— अबिरल भगति मागि बर गीध गयउ हरिधाम ।
तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

हे रामजी ! आपकी जय हो । आपका रूप अनुपम है, आप निर्गुण हैं, सगुण हैं और सत्य ही गुणोंके (मायाके) प्रेरक हैं । दस सिरवाले रावणकी प्रचण्ड भुजाओंको खण्ड–खण्ड करनेके लिये प्रचण्ड बाण धारण करनेवाले, पृथ्वीको सुशोभित करनेवाले, जलयुक्त मेघके समान श्याम शरीरवाले, कमलके समान मुख और (लाल) कमलके समान विशाल नेत्रोंवाले, विशाल भुजाओंवाले और भव–भयसे छुड़ानेवाले कृपालु श्रीरामजीको मैं नित्य नमस्कार करता हूँ ।।१।।

आप अपरिमित बलवाले हैं, अनादि, अजन्मा, अव्यक्त (निराकार), एक, अगोचर (अलक्ष्य), गोविन्द (वेदवाक्योंद्वार जाननेयोग्य), इन्द्रियोंसे अतीत (जन्म–मरण, सुख–दुःख, हर्ष–शोकादि) द्वन्द्वोंको हरनेवाले, विज्ञानकी घनमूर्ति और पृथ्वीके आधार हैं तथा जो संत राम–मन्त्रको जपते हैं, उन अनन्त सेवकोंके मनको आनन्द देनेवाले हैं । उन निष्कामप्रिय (निष्कामजनोंके प्रेमी अथवा उन्हें प्रिय) तथा काम आदि दुष्टों (दुष्ट–वृत्तियों) के दलका दलन करनेवाले श्रीरामजीको मैं नित्य नमस्कार करता हूँ ।।२।।

जिनको श्रुतियाँ निरञ्जन (मायासे परे), ब्रह्म, व्यापक, निर्विकार और जन्मरहित कहकर गान करती हैं । मुनि जिन्हें ध्यान, ज्ञान, वैराग्य और योग आदि अनेक साधन करके पाते हैं । वे ही करुणाकन्द, शोभाके समूह (स्वयं श्रीभगवान्) प्रकट होकर जड़–चेतन समस्त जगत्‌को मोहित कर रहे हैं । मेरे हृदय–कमलके भ्रमररूप उनके अङ्ग–अङ्गमें बहुत–से कामदेवोंकी छवि शोभा पा रही है ।।३।।

जो अगम और सुगम हैं, निर्मलस्वभाव हैं, विषम और सम हैं और सदा शीतल (शान्त) हैं । मन और इन्द्रियोंको सदा वशमें करते हुए योगी बहुत साधन करनेपर जिन्हें देख पाते हैं, वे तीनों लोकोंके स्वामी, रमानिवास श्रीरामजी निरन्तर अपने दासोंके वशमें रहते हैं, वे ही मेरे हृदयमें निवास करें, जिनकी पवित्र कीर्ति आवागमनको मिटानेवाली है ।।४।।

अखण्ड भक्तिका वर माँगकर गृध्रराज जटायु श्रीहरिके परमधामको चला गया । श्रीरामचन्द्रजीने उसकी (दाहकर्म आदि सारी) क्रियाएँ यथायोग्य अपने हाथोंसे कीं ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Collection, Bantalab Jammu

ब्रह्माजी द्वारा प्रभु श्रीराम जी की स्तुति

छं०— जय राम सदा सुखधाम हरे । रघुनायक सायक चाप धरे ।।
भव बारन दारन सिंह प्रभो । गुन सागर नागर नाथ बिभो ।।

छं०— तन काम अनेक अनूपछबी । गुण गावत सिद्ध मुनींद्र कबी ।।
जसु पावन रावन नाग महा । खगनाथ जथा करि कोप गहा ।।

जन रंजन भंजन सोक भयं । गतक्रोध सदा प्रभु बोधमयं ।।
अवतार उदार अपार गुनं । महि भार बिभंजन ग्यानघनं ।।३।।

अज ब्यापकमेकमनादि सदा । करुनाकर राम नमामि मुदा ।।
रघुबंस बिभूषन दूषन हा । कृत भूप बिभीषन दीन रहा ।।४।।

गुन ग्यान निधान अमान अजं । नित राम नमामि बिभुं बिरजं ।।
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं । खल बृंद निकंद महा कुसलं ।।५।।

बिनु कारन दीन दयाल हितं । छबि धाम नमामि रमा सहितं ।।
भव तारन कारन काज परं । मन संभव दारुन दोष हरं ।।६।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

हे नित्य सुखधाम और (दु:खोंको हरनेवाले) हरि ! हे धनुष–बाण धारण किये हुए रघुनाथजी ! आपकी जय हो । हे प्रभो ! आप भव (जन्म–मरण) रूपी हाथीको विदीर्ण करनेके लिये सिंहके समान हैं । हे नाथ ! हे सर्वव्यापक ! आप गुणोंके समुद्र और परम चतुर हैं ।।१।।

आपके शरीकी अनेकों कामदेवोंके समान, परन्तु अनुपम छवि है । सिद्ध, मुनीश्वर और कवि आपके गुण गाते रहते हैं । आपका यश पवित्र है । आपने रावणरूपी महासर्पको गरुड़की तरह क्रोध करके पकड़ लिया ।।२।।

हे प्रभो ! आप सेवकोंको आनन्द देनेवाले, शोक और भयका नाश करनेवाले, सदा क्रोधरहित और नित्य ज्ञानस्वरूप हैं । आपका अवतार श्रेष्ठ, अपार दिव्य गुणोंवाला, पृथ्वीका भार उतारनेवाला और ज्ञानका समूह है ।।३।।

(किन्तु अवतार लेनेपर भी) आप नित्य, अजन्मा, व्यापक, एक (अद्वितीय) और अनादि हैं। हे करुणाकी खान श्रीरामजी ! मैं आपको बड़े ही हर्षके साथ नमस्कार करता हूँ । हे रघुकुलके आभूषण ! हे दूषण राक्षसको मारनेवाले तथा समस्त दोषोंको हरनेवाले ! विभीषण दीन था, उसे आपने (लंकाका) राजा बना दिया ।।४।।

हे गुण और ज्ञानके भण्डार ! हे मानरहित ! हे अजन्मा, व्यापक और मायिक विकारोंसे रहित श्रीराम ! मैं आपको नित्य नमस्कार करता हूँ । आपके भुजदण्डोंका प्रताप और बल प्रचण्ड है । दुष्टसमूहके नाश करनेमें आप परम निपुण हैं ।।५।।

हे बिना ही कारण दीनोंपर दया तथा उनका हित करनेवाले और शोभाके धाम ! मैं श्रीजानकीजीसहित आपको नमस्कार करता हूँ आप भवसागरसे तारनेवाले हैं, कारणरूपा प्रकृति और कार्यरूप जगत् दोनोंसे परे हैं और मनसे उत्पन्न होनेवाले कठिन दोषोंको हरनेवाले हैं ।।६।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर चाप मनोहर त्रोन धरं । जलजारुन लोचन भूपबरं ।।
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं । मद मार मुधा ममता समनं ।।७।।

अनवद्य अखंड न गोचर गो । सबरूप सदा सब होइ न गो ।
इति बेद बदंति न दंतकथा । रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा ।।८।।

कृतकृत्य बिभो सब बानर ए । निरखंति तवानन सादर ए ।।
धिग जीवन देव सरीर हरे । तव भक्ति बिना भव भूलि परे ।।

अब दीनदयाल दया करिऐ । मति मोरि बिभेदकरी हरिऐ ।।
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिऐ । दुख सो सुख मानि सुखी चरिऐ ।। १०।।

खल खंडन मंडन रम्य छमा । पद पंकज सेवित संभु उमा ।।
नृप नायक दे बरदानमिदं । चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं ।। ११।।

दो०— बिनय कीन्हि चतुरानन प्रेम पुलक अति गात ।
सोभासिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

आप मनोहर बाण, धनुष और तरकस धारण करनेवाले हैं । (लाल) कमलके समान रक्तवर्ण आपके नेत्र हैं । आप राजाओंमें श्रेष्ठ, सुखके मन्दिर, सुन्दर, श्री (लक्ष्मीजी) के वल्लभ तथा मद (अहंकार), काम और झूठी ममताके नाश करनेवाले हैं ।।७।।

आप अनिन्द्य या दोषरहित हैं, अखण्ड हैं, इन्द्रियोंके विषय नहीं हैं । सदा सर्वरूप होते हुए भी आप वह सब कभी हुए ही नहीं, ऐसा वेद कहते हैं । यह (कोई) दन्तकथा (कोरी कल्पना) नहीं है । जैसे सूर्य और सूर्यका प्रकाश अलग–अलग हैं और अलग नहीं भी हैं, वैसे ही आप भी संसारसे भिन्न तथा अभिन्न दोनों ही हैं ।।८।।

हे व्यापक प्रभो ! ये सब वानर कृतार्थरूप हैं, जो आदरपूर्वक ये आपका मुख देख रहे हैं । (और) हे हरे ! हमारे (अमर) जीवन और देव (दिव्य) शरीरको धिक्कार है, जो हम आपकी भक्तिसे रहित हुए संसारमें (सांसारिक विषयोंमें) भूले पड़े हैं ।।९।।

हे दीनदयालु ! अब दया कीजिये और मेरी उस विभेद उत्पन्न करनेवाली बुद्धिको हर लीजिये, जिससे मैं विपरीत कर्म करता हूँ और जो दुःख है, उसे सुख मानकर आनन्दसे विचरता हूँ ।।१०।।

आप दुष्टोंका खण्डन करनेवाले और पृथ्वीके रमणीय आभूषण हैं । आपके चरण–कमल श्रीशिव–पार्वतीद्वारा सेवित हैं । हे राजाओंके महाराज ! मुझे यह वरदान दीजिये कि आपके चरणकमलोंमें सदा मेरा कल्याणदायक (अनन्य) प्रेम हो ।।११।।

इस प्रकार ब्रह्माजीने अत्यन्त प्रेम–पुलकित शरीरसे विनती की । शोभाके, समुद्र श्रीरामजीके दर्शन करते–करते उनके नेत्र तृप्त ही नहीं होते थे ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देवराज इन्द्र द्वारा प्रभु श्रीरामजी की स्तुति

छं०— जय राम सोभा धाम । दायक प्रनत बिश्राम ।।
धृत त्रोन बर सर चाप । भुजदंड प्रबल प्रताप ।।१।।

जय दूषनारि खरारि । मर्दन निसाचर धारि ।।
यह दुष्ट मारेउ नाथ । भए देव सकल सनाथ ।।२।।

जय हरन धरनी भार । महिमा उदार अपार ।।
जय रावनारि कृपाल । किए जातुधान बिहाल ।।३।।

लंकेस अति बल गर्ब । किए बस्य सुर गंधर्ब ।।
मुनि सिद्ध नर खग नाग । हठि पंथ सब कें लाग ।।

परद्रोह रत अति दुष्ट । पायो सो फलु पापिष्ट ।।
अब सुनहु दीन दयाल । राजीव नयन बिसाल ।।

मोहि रहा अति अभिमान । नहिं कोउ मोहि समान ।।
अब देखि प्रभु पद कंज । गत मान प्रद दुख पुंज ।।

कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव । अब्यक्त जेहि श्रुति गाव ।।
मोहि भाव कोसल भूप । श्रीराम सगुन सरूप ।।

बैदेहि अनुज समेत । मम हृदयँ करहु निकेत ।।
मोहि जानिऐ निज दास । दे भक्ति रमानिवास ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

शोभाके धाम, शरणागतको विश्राम देनेवाले, श्रेष्ठ तरकस, धनुष और बाण धारण किये हुए, प्रबल प्रतापी भुजदण्डोंवाले श्रीरामचन्द्रजीकी जय हो ! ।।१।।

हे खर और दूषणके शत्रु और राक्षसोंकी सेनाके मर्दन करनेवाले ! आपकी जय हो । हे नाथ ! आपने इस दुष्टको मारा, जिससे सब देवता सनाथ (सुरक्षित) हो गये ।।२।।

हे भूमिका भार हरनेवाले ! हे अपार श्रेष्ठ महिमावाले ! आपकी जय हो । हे रावणके शत्रु ! हे कृपालु ! आपकी जय हो । आपने राक्षसोंको बेहाल (तहस–नहस) कर दिया ।।३।।

लंकापति रावणको अपने बलका बहुत घमंड था । उसने देवता और गन्धर्व सभीको अपने वशमें कर लिया था और वह मुनि, सिद्ध, मनुष्य, पक्षी, और नाग आदि सभीके हठपूर्वक (हाथ धोकर) पीछे पड़ गया था ।।४।।

वह दूसरोंसे द्रोह करनेमें तत्पर और अत्यन्त दुष्ट था । उस पापीने वैसा ही फल पाया । अब हे दीनोंपर दया करनेवाले ! हे कमलके समान विशाल नेत्रोंवाले ! सुनिये ।।५।।

मुझे अत्यन्त अभिमान था कि मेरे समान कोई नहीं है, पर अब प्रभु (आप) के चरणकमलोंके दर्शन करनेसे दुःख समूहका देनेवाला मेरा वह अभिमान जाता रहा ।।६।।

कोई उन निर्गुण ब्रह्मका ध्यान करते हैं जिन्हें वेद अव्यक्त (निराकार) कहते हैं । परन्तु हे रामजी ! मुझे तो आपका यह सगुण कोसलराज–स्वरूप ही प्रिय लगता है ।।७।।

श्रीजानकीजी और छोटे भाई लक्ष्मणजीसहित मेरे हृदयमें अपना घर बनाइये । हे रमानिवास ! मुझे अपना दास समझिये और अपनी भक्ति दीजिये ।।८।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छं०— दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं ।
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ।।
सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुजतनु अतुलितबलं ।
ब्रह्मादि संकर सेब्य राम नमामि करुना कोमलं ।।

दो०— अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसुदेहु कृपाल ।
काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल ।।

लङ्का काण्ड

त्रिपुरारि शिवजी द्वारा श्रीरामजी की स्तुति

छं०— मामभिरक्षय रघुकुल नायक । धृत बर चाप रुचिर कर सायक ।।
मोह महा घन पटल प्रभंजन । संसय बिपिन अनल सुर रंजन ।।

अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर । भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर ।।
काम क्रोध मद गज पंचानन । बसहु निरंतर जन मन कानन ।।

बिषय मनोरथ पुंज कंज बन । प्रबल तुषार उदार पार मन ।।
भव बारिधि मंदर परमं दर । बारय तारय संसृति दुस्तर ।।

स्याम गात राजीव बिलोचन । दीन बंधु प्रनतारति मोचन ।।
अनुज जानकी सहित निरंतर । बसहु राम नृप मम उर अंतर ।।
मुनि रंजन महि मंडल मंडन । तुलसीदास प्रभु त्रास बिखंडन ।।

दो०— नाथ जबहिं कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार ।
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टीका

हे रमानिवास ! हे शरणागतके भयको हरनेवाले और उसे सब प्रकारका सुख देनेवाले ! मुझे अपनी भक्ति दीजिये । हे सुखके धाम ! हे अनेकों कामदेवोंकी छबिवाले रघुकुलके स्वामी श्रीरामचन्द्रजी ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ । हे देवसमूहको आनन्द देनेवाले, (जन्म–मृत्यु, हर्ष–विषाद, सुख–दुःख आदि) द्वन्द्वोंके नाश करनेवाले, मनुष्यशरीरधारी, अतुलनीय बलवाले, ब्रह्मा और शिव आदिसे सेवनीय, करुणासे कोमल श्रीरामजी ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ ।

हे कृपालु ! अब मेरी ओर कृपा करके (कृपादृष्टिसे) देखकर आज्ञा दीजिये कि मैं क्या (सेवा) करूँ ! इन्द्रके ये प्रिय वचन सुनकर दीनदयालु श्रीरामजी बोले–।।

हे रघुकुलके स्वामी ! सुन्दर हाथोंमें श्रेष्ठ धनुष और सुन्दर बाण धारण किये हुए आप मेरी रक्षा कीजिये । आप महामोहरूपी मेघसमूहके (उड़ानेके) लिये प्रचण्ड पवन हैं, संशयरूपी वनके (भस्म करनेके) लिये अग्नि हैं और देवताओंको आनन्द देनेवाले हैं ।।२।।

आप निर्गुण, सगुण, दिव्य गुणोंके धाम और परम सुन्दर हैं । भ्रमरूपी अन्धकारके (नाशके) लिये प्रबल प्रतापी सूर्य हैं । काम, क्रोध और मदरूपी हाथियोंके (वधके) लिये सिंहके समान आप इस सेवकके मनरूपी वनमें निरन्तर निवास कीजिये ।।२।।

विषयकामनाओंके समूहरूपी कमलवनके (नाशके) लिये आप प्रबल पाला हैं, आप उदार और मनसे परे हैं । भवसागर (को मथने) के लिये आप मन्दराचल पर्वत हैं । आप हमारे परम भयको दूर कीजिये और हमें दुस्तर संसारसागरसे पार कीजिये ।।३।।

हे श्यामसुन्दर–शरीर ! हे कमलनयन ! हे दीनबन्धु ! हे शरणागतको दुःखसे छुड़ानेवाले ! हे राजा रामचन्द्रजी ! आप छोटे भाई लक्ष्मण और जानकीजीसहित निरन्तर मेरे हृदयके अंदर निवास कीजिये । आप मुनियोंको आनन्द देनेवाले, पृथ्वीमण्डलके भूषण, तुलसीदासके प्रभु और भयका नाश करनेवाले हैं ।।४–५।।

हे नाथ ! जब अयोध्यापुरीमें आपका राजतिलक होगा, तब हे कृपासागर ! मैं आपकी उदार लीला देखने आऊँगा ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाटों का रूप धर चार वेदों द्वारा प्रभु श्रीरामजी का गुणगान

छं०— जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने ।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुजबल हने ।।
अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दुख दहे ।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे ।।

तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे ।।
जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिधि दुख ते निर्बहे ।
भव खेद छेदन दच्छ हम कहुँ रच्छ राम नमामहे ।।

जे ग्यान मान बिमत्त तब भव हरनि भक्ति न आदरी ।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ।।
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे ।।

जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी ।
नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ।।
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे ।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

हे सगुण और निर्गुणरूप ! हे अनुपम रूप–लावण्ययुक्त ! हे राजाओं के शिरोमणि ! आपकी जय हो । आपने रावण आदि प्रचण्ड, प्रबल और दुष्ट निशाचरोंको अपनी भुजाओं के बलसे मार डाला । आपने मनुष्य–अवतार लेकर संसारके भारको नष्ट करके अत्यन्त कठोर दु:खोंको भस्म कर दिया । हे दयालु ! हे शरणागतकी रक्षा करनेवाले प्रभो ! आपकी जय हो । मैं शक्ति (सीताजी) सहित शक्तिमान् आपको नमस्कार करता हूँ ।।१।।

हे हरे ! आपकी दुस्तर मायाके वशीभूत होनेके कारण देवता, राक्षस, नाग, मनुष्य और चर, अचर सभी काल, कर्म और गुणोंसे भरे हुए (उनके वशीभूत हुए) दिन–रात अनन्त भव (आवागमन) के मार्ग में भटक रहे हैं । हे नाथ ! इनमें से जिनको आपने कृपा करके (कृपादृष्टिसे) देख लिया, वे (माया–जनित) तीनों प्रकारके दु:खोंसे छूट गये । हे जन्म–मरणके श्रमको काटनेमें कुशल श्रीरामजी ! हमारी रक्षा कीजिये । हम आपको नमस्कार करते हैं ।।२।।

जिन्होंने मिथ्या ज्ञानके अभिमानमें विशेषरूपसे मतवाले होकर जन्म–मृत्यु (के भय) को हरनेवाली आपकी भक्तिका आदर नहीं किया, हे हरि ! उन्हें देव–दुर्लभ (देवतओंको भी बड़ी कठिनतासे प्राप्त होनेवाले, ब्रह्मा आदिके) पदको पाकर भी हम उस पदसे नीचे गिरते देखते हैं । (परन्तु) जो सब आशाओंको छोड़कर आपपर विश्वास करके आपके दास हो रहते हैं, वे केवल आपका नाम ही जपकर बिना ही परिश्रम भवसागरसे तर जाते हैं । हे नाथ ! ऐसे आपका हम स्मरण करते हैं ।।३।।

जो चरण शिवजी और ब्रह्माजीके द्वारा पूज्य हैं, तथा जिन चरणोंकी कल्याणमयी रजका स्पर्श पाकर (शिला बनी हुई) गौतमऋषिकी पत्नी अहल्या तर गयी, जिन चरणोंके नखसे मुनियोंद्वारा वन्दित, त्रैलोक्यको पवित्र करनेवाली देवनदी गङ्गाजी निकलीं और ध्वजा, वज्र, अङ्कुश और कमल, इन चिह्नोंसे युक्त जिन चरणोंमें वनमें फिरते समय काँटे चुभ जानेसे घट्ठे पड़ गये हैं, हे मुकुन्द ! हे राम ! हे रमापति ! हम आपके उन्हीं दोनों चरणकमलोंको नित्य भजते रहते हैं ।।४।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने ।।
फलजुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे ।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे ।।

जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मन पर ध्यावहीं ।
ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं ।।
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर मागहीं ।
मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं ।।

दो०— सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्हि उदार ।
अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार ।।

उत्तर काण्ड

भगवान शिव द्वारा प्रभु श्रीरामजी की स्तुति

छं०— जय राम रमारमनं समनं । भवताप भयाकुल पाहि जनं ।
अवधेस सुरेस रमेस बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ।।

दससीस बिनासन बीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजाा ।।
रजनीचर बृंद पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ।।

महि मंडल मंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निषंग बरं ।।
मद मोह महा ममता रजनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ।।

मनजात किरात निपात किए । मृग लोग कुभोग सरेन हिए ।।
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । बिषया बन पावँर भूलि परे ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टीका

वेद शास्त्रों ने कहा है कि जिसका मूल अव्यक्त (प्रकृति) है, जो (प्रवाहरूपसे) अनादि है, जिसके चार त्वचाएँ, छः तने, पचीस शाखाएँ और अनेकों पत्ते और बहुत–से फूल हैं, जिसमें कड़वे और मीठे दो प्रकारके फल लगे हैं, जिसपर एक ही बेल है, जो उसीके आश्रित रहती है, जिसमें नित्य नये पत्ते और फूल निकलते रहते हें, ऐसे संसारवृक्षस्वरूप (विश्वरूपमें प्रकट) आपको हम नमस्कार करते हैं ।।५।।

ब्रह्म अजन्मा है, अद्वैत है, केवल अनुभवसे ही जाना जाता है और मनसे परे है–जो (इस प्रकार कहकर उस) ब्रह्मका ध्यान करते हैं, वे ऐसा कहा करें और जाना करें, किन्तु हे नाथ ! हम तो नित्य आपका सगुण यश ही गाते हैं । हे करुणा के धाम प्रभो ! हे सदगुणों की खान ! हे देव ! हम यह वर माँगते हैं कि मन, वचन और कर्मसे विकारोंको त्यागकर आपके चरणोंमें ही प्रेम करें ।।६।।

वेदोंने सबके देखते यह श्रेष्ठ विनती की । फिर वे अन्तर्धान हो गये और ब्रह्मलोकको चले गये ।।

हे राम ! रमारमण (लक्ष्मीकान्त) ! हे जन्म मरणके संतापका नाश करनेवाले ! आपकी जय हो, आवागमनके भयसे व्याकुल इस सेवककी रक्षा कीजिये । हे अवधपति ! हे देवताओंके स्वामी ! हे रमापति ! हे विभो ! मैं शरणागत आपसे यही माँगता हूँ कि हे प्रभो ! मेरी रक्षा कीजिये ।१।।

हे दस सिर और बीस भुजाओंवाले रावणका विनाश करके पृथ्वीके सब महान् रोगों (कष्टों) को दूर करनेवाले श्रीरामजी ! राक्षससमूहरूपी जो पतंगे थे, वे सब आपके बाणरूपी अग्निके प्रचण्ड तेजसे भस्म हो गये ।।२।।

आप पृथ्वीमण्डलके अत्यन्त सुन्दर आभूषण हैं, आप श्रेष्ठ बाण, धनुष और तरकस धारण किये हुए हैं । महान् मद, मोह और ममतारूपी रात्रिके अन्धकारसमूहके नाश करनेके लिये आप सूर्यके तेजोमय किरणसमूह हैं ।।३।।

कामदेवरूपी भीलने मनुष्यरूपी हिरनों के हृदयमें कुभोगरूपी बाण मारकर उन्हें गिरा दिया है । हे नाथ ! हे (पाप–तापका हरण करनेवाले) हरे ! उसे मारकर विषयरूपी वनमें भूले पड़े हुए इन पामर अनाथ जीवोंकी रक्षा कीजिये ।।४।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहु रोग बियोगन्हि लोग हए । भवदंघ्रि निरादर के फल ए ।।
भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ।।

अति दीन मलीन दुखी नितहीं । जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं ।।
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ।।

नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा ।।
एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ।।

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ । पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ ।।
सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंति मही ।।

मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुबीर महा रनधीर अजे ।।
तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ।।

गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरामनं ।।
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं । महिपाल बिलोकय दीनजनं ।।

दो०— बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ।।२४।।

बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास ।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास ।।२४(ख)।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोग बहुत–से रोगों और वियोगों (दुःखों) से मारे हुए हैं । ये सब आपके चरणोंके निरादरके फल हैं । जो मनुष्य आपके चरणकमलोंमें प्रेम नहीं करते, वे अथाह भवसागरमें पड़े हैं ।।५।।

जिन्हें आपके चरणकमलोंमें प्रीति नहीं है वे नित्य ही अत्यन्त दीन, मलिन (उदास) और दुखी रहते हैं । और जिन्हें आपकी लीला–कथाका आधार है, उनको संत और भगवान् सदा प्रिय लगने लगते हैं ।।६।।

उनमें न राग (आसक्ति) है, न लोभ, न मान है, न मद । उनको सम्पत्ति (सुख) और विपत्ति (दुःख) समान है । इसीसे मुनिलोग योग (साधन) का भरोसा सदाके लिये त्याग देते हैं और प्रसन्नताके साथ आपके सेवक बन जाते हैं ।।७।।

वे प्रेमपूर्वक नियम लेकर निरन्तर शुद्ध हृदयसे आपके चरणकमलोंकी सेवा करते रहते हैं और निरादर और आदरको समान मानकर वे सब संत सुखी होकर पृथ्वी पर विचरते हैं ।।८।।

हे मुनियोंके मनरूपी कमलके भ्रमर ! हे महान् रणधीर एवं अजेय श्रीरघुवीर ! मैं आपको भजता हूँ (आपकी शरण ग्रहण करता हूँ) हे हरि ! आपका नाम जपता हूँ और आपको नमस्कार करता हूँ । आप जन्म–मरणरूपी रोगकी महान् औषध और अभिमानके शत्रु हैं ।।९।।

आप गुण, शील और कृपाके परम स्थान हैं । आप लक्ष्मीपति हैं, मैं आपको निरन्तर प्रणाम करता हूँ । हे रघुनन्दन ! (आप जन्म–मरण, सुख–दुःख, राग–द्वेषादि) द्वन्द्व–समूहोंका नाश कीजिये । हे पृथ्वीकी पालना करनेवाले राजन् ! इस दीन जनकी ओर भी दृष्टि डालिये ।।१०।।

मैं आपसे बार–बार यही वरदान माँगता हूँ कि मुझे आपके चरणकमलोंकी अचलभक्ति और आपके भक्तोंका सत्सङ्ग सदा प्राप्त हो । हे लक्ष्मीपते ! हर्षित होकर मुझे यही दीजिये ।।२४(क)।।

श्रीरामचन्द्रजीके गुणोंका वर्णन करके उमापति महादेवजी हर्षित होकर कैलासको चले गये । तब प्रभुने वानरोंको सब प्रकारसे सुख देनेवाले डेरे दिलवाये ।।२४(ख)।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सनकादि मुनियों द्वारा प्रभु श्रीरामजी की स्तुति

सुनि प्रभु बचन हरषि मुनि चारी । पुलकित तन अस्तुति अनुसारी ॥
जय भगवंत अनंत अनामय । अनघ अनेक एक करुनामय ॥

जय निर्गुन जय जय गुन सागर । सुख मंदिर सुंदर अति नागर ॥
जय इंदिरा रमन जय भूधर । अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥

ग्यान निधान अमान मानप्रद । पावन सुजस पुरान बेद बद ॥
तग्य कृतग्य अग्यता भंजन । नाम अनेक अनाम निरंजन ॥

सर्ब सर्बगत सर्ब उरालय । बससि सदा हम कहुँ परिपालय ॥
द्वंद बिपति भव फंद बिभंजय । हृदि बसि राम काम मद गंजय ॥

दो०— परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ॥३४॥

देहु भगति रघुपति अति पावनि । त्रिबिधि ताप भव दाप नसावनि ॥
प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु । होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु ॥

भव बारिधि कुंभज रघुनायक । सेवत सुलभ सकल सुख दायक ॥
मन संभव दारुन दुख दारय । दीनबंधु समता बिस्तारय ॥

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

प्रभुके वचन सुनकर चारों मुनि हर्षित होकर, पुलकित शरीरसे स्तुति करने लगे—हे भगवन् । आपकी जय हो । आप अन्तरहित, विकाररहित, पापरहित, अनेक (सब रूपोंमें प्रकट), एक (अद्वितीय) और करुणामय हैं ।।२।।

हे निर्गुण आपकी जय हो । हे गुणके समुद्र ! आपकी जय हो, जय हो । आप सुखके धाम, (अत्यन्त) सुन्दर और अति चतुर हैं। हे लक्ष्मी पति ! आप की जय हो। हे पृथ्वीके धारण करनेवाले ! आपकी जय हो । आप उपमारहित, अजन्मा, अनादि और शोभाकी खान हैं ।।२।।

आप ज्ञानके भण्डार, (स्वयं) मानरहित और (दूसरोंको) मान देनेवाले हैं । वेद और पुराण आपका पावन सुन्दर यश गाते हैं । आप तत्त्वके जाननेवाले, की हुई सेवाको माननेवाले और अज्ञानका नाश करनेवाले हैं । हे निरंजन (मायारहित) ! आपके अनेकों (अनन्त) नाम हैं और कोई नाम नहीं है (अर्थात् आप सब नामोंके परे हैं) ।।३।।

आप सर्वरूप हैं, सबमें व्याप्त हैं और सबके हृदयरूपी घरमें सदा निवास करते हैं, (अत:) आप हमारा परिपालन कीजिये । (राग—द्वेष, अनुकूलता—प्रतिकूलता, जन्म—मृत्यु आदि) द्वन्द्व, विपत्ति और जन्म—मृत्युके जालको काट दीजिये । हे रामजी ! आप हमारे हृदयमें बसकर काम और मदका नाश कर दीजिये ।

आप परमानन्दस्वरूप, कृपाके धाम मनकी कामनाओंको परिपूर्ण करनेवाले हैं । हे श्रीरामजी ! हमको अपनी अविचल प्रेमा—भक्ति दीजिये ।।

हे रघुनाथजी ! आप हमें अपनी अत्यन्त पवित्र करनेवाली और तीनों प्रकारके तापों और जन्म—मरणके क्लेशोंका नाश करनेवाली भक्ति दीजिये । हे शरणागतोंकी कामना पूर्ण करनेके लिये कामधेनु और कल्पवृक्षरूप प्रभो ! प्रसन्न होकर हमें यही वर दीजिये ।।१।।

हे रघुनाथजी ! आप जन्म—मृत्युरूप समुद्रको सोखनेके लिये अगस्त्य मुनिके समान हैं । आप सेवा करनेमें सुलभ हैं तथा सब सुखोंके देनेवाले हैं । हे दीनबन्धो ! मनसे उत्पन्न दारुण दु:खोंका नाश कीजिये और (हममें) समदृष्टिका विस्तार कीजिये ।।२।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आस त्रास इरिषादि निवारक । बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक ।।
भूप मौलि मनि मंडन धरनी । देहि भगति संसृति सरि तरनी ।।

मुनि मन मानस हंस निरंतर । चरन कमल बंदित अज संकर ।।
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक । काल करम सुभाउ गुन भच्छक ।।
तारन तरन हरन सब दूषन । तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषन ।।

दो०— बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ ।
ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभीष्ट बर पाइ ।।

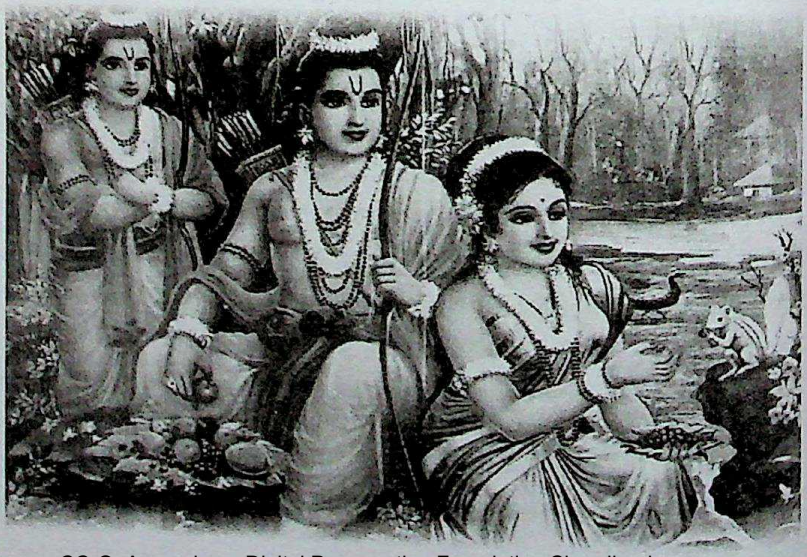

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

आप (विषयोंकी) आशा, भय और ईर्ष्या आदिके निवारण करनेवाले हैं तथा विनय, विवेक और वैराग्यके विस्तार करनेवाले हैं । हे राजाओंके शिरोमणि एवं पृथ्वीके भूषण श्रीरामजी ! संसृति (जन्म–मृत्युके प्रवाह) रूपी नदीके लिए नौकारूप अपनी भक्ति प्रदान कीजिये ।।३।।

हे मुनियोंके मनरूपी मानसरोवरमें निरन्तर निवास करनेवाले हंस ! आपके चरणकमल ब्रह्माजी और शिवजीके द्वारा वन्दित हैं । आप रघुकुलके केतु, वेदमर्यादाके रक्षक और काल, कर्म, स्वभाव तथा गुण (रूप बन्धनों) के भक्षक (नाशक) हैं ।।४।।

आप तरन–तारन (स्वयं तरे हुए और दूसरोंको तारनेवाले) तथा सब दोषोंको हरनेवाले हैं । तीनों लोकोंके विभूषण आप ही तुलसीदासके स्वामी हैं ।।५।।

प्रेमसहित बार–बार स्तुति करके और सिर नवाकर तथा अपना अत्यन्त मनचाहा वर पाकर सनकादि मुनि ब्रह्मलोक को गये ।।

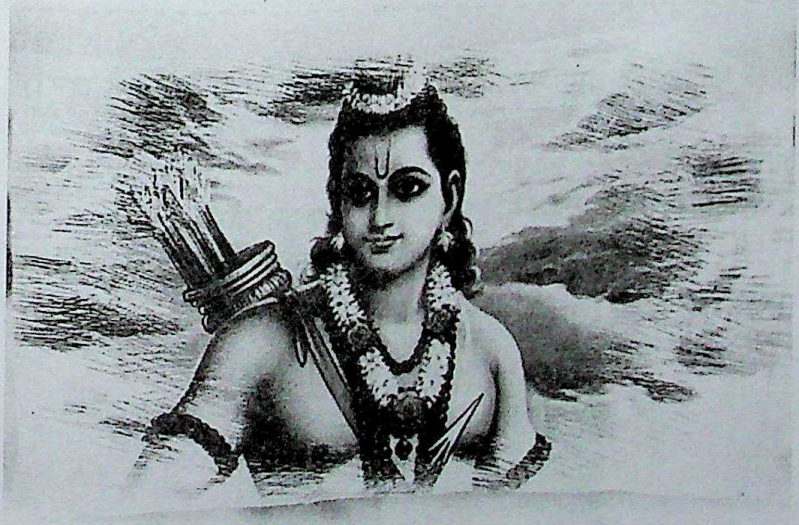

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नारद मुनि द्वारा प्रभु श्रीरामजी का कीर्तिगान

मामवलोकय पंकज लोचन । कृपा बिलोकनि सोच बिमोचन ।।
नील तामरस स्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ।।

जातुधान बरूथ बल भंजन । मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन ।।
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक । असरन सरन दीन जन गाहक ।।

भुज बल बिपुल भार महि खंडित । खर दूषन बिराध बध पंडित ।।
रावनारि सुखरूप भूपबर । जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर ।।

सुजस पुरान बिदित निगमागम । गावत सुर मुनि संत समागम ।।
कारुनीक ब्यलीक मद खंडन । सब बिधि कुसल कोसला मंड़न ।।

कलि मल मथन नाम ममताहन । तुलसीदास प्रभु पाहि प्रनत जन।।

दो०— प्रेम सहित मुनि नारद बरनि राम गुन ग्राम ।
सोभासिंधु हृदयँ धरि गए जहाँ बिधि धाम ।।५२।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

कृपापूर्वक देख लेनेमात्रसे शोकके छुड़ानेवाले हे कमलनयन ! मेरी ओर देखिये (मुझपर भी कृपादृष्टि कीजिये) हे हरि ! आप नील कमलके समान श्यामवर्ण और कामदेवके शत्रु महादेवजीके हृदयकमलके मकरन्द (प्रेम–रस) के पान करनेवाले भ्रमर हैं ।।१।।

आप राक्षसोंकी सेनाके बलको तोड़नेवाले हैं । मुनियों और संतजनोंको आनन्द देनेवाले और पापोंके नाश करनेवाले हैं । ब्राह्मणरूपी खेतीके लिये आप नये मेघसमूह हैं और शरणहीनोंको शरण देनेवाले तथा दीन जनोंको अपने आश्रयमें ग्रहण करनेवाले हैं ।।२।।

अपने बाहुबलसे पृथ्वीके बड़े भारी बोझको नष्ट करनेवाले, खर–दुषण और विराधके वध करनेमें कुशल, रावणके शत्रु, आनन्दस्वरूप, राजाओंमें श्रेष्ठ और दशरथके कुलरूपी कुमुदिनीके चन्द्रमा श्रीरामजी ! आपकी जय हो ।।३।।

आपका सुन्दर यश पुराणों, वेदोंमें और तन्त्रादि शास्त्रोंमें प्रकट है । देवता, मुनि और संतोंके समुदाय उसे गाते हैं । आप करुणा करनेवाले और झूठे मदका नाश करनेवाले, सब प्रकारसे कुशल (निपुण) श्रीअयोध्याजीके भूषण ही हैं ।।५।।

आपका नाम कलियुगके पापोंको मथ डालनेवाला और ममताको मानरेवाला है । हे तुलसीदासके प्रभु ! शरणागतकी रक्षा कीजिये ।।५।।

श्रीरामचन्द्रजीके गुणसमूहोंका प्रेमपूर्वक वर्णन करके मुनि नारदजी शोभाके समुद्र प्रभुको हृदयमें धरकर जहाँ ब्रह्मलोक है वहाँ चले गये ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ब्राह्मण द्वारा शिव स्तुति

छं०— नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी । सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानंद संदोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

हे मोक्षस्वरूप, विभु, व्यापक, ब्रह्म और वेदस्वरूप, ईशान दिशाके ईश्वर तथा सबके स्वामी श्रीशिवजी ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ । निजस्वरूपमें स्थित (अर्थात् मायादिरहित), (मायिक) गुणोंसे रहित, भेदरहित, इच्छारहित, चेतन आकाशरूप एवं आकाशको ही वस्त्ररूपमें धारण करनेवाले दिगम्बर (अथवा आकाशको भी आच्छादित करनेवाले) आपको मैं भजता हूँ ।।१।।

निराकार, ओङ्कारके मूल, तुरीय (तीनों गुणोंसे अतीत), वाणी, ज्ञान और इन्द्रियोंसे परे, कैलासपति, विकराल, महाकालके भी काल, कृपालु, गुणोंके धाम, संसारसे परे आप परमेश्वरको मैं नमस्कार करता हूँ ।।२।।

जो हिमाचलके समान गौरवर्ण तथा गम्भीर हैं, जिनके शरीरमें करोड़ों कामदेवोंकी ज्योति एवं शोभा है, जिनके सिरपर सुन्दर नदी गङ्गाजी विराजमान हैं, जिनके ललाटपर द्वितीयाका चन्द्रमा और गलेमें सर्प सुशोभित हैं ।।३।।

जिनके कानोंमें कुण्डल हिल रहे हैं, सुन्दर भृकुटी और विशाल नेत्र हैं, जो प्रसन्नमुख, नीलकण्ठ और दयालु हैं, सिंहचर्मका वस्त्र धारण किये और मुण्डमाला पहने हैं, उन सबके प्यारे और सबके नाथ (कल्याण करनेवाले) श्रीशङ्करजीको मैं भजता हूँ ।।४।।

प्रचण्ड (रुद्ररूप), श्रेष्ठ, तेजस्वी, परमेश्वर, अखण्ड, अजन्मा, करोड़ों सूर्योंके समान प्रकाशवाले, तीनों प्रकारके शूलों (दुःखों) को निर्मूल करनेवाले, हाथमें त्रिशूल धारण किये, भाव (प्रेम) के द्वारा प्राप्त होनेवाले भवानीके पति श्रीशङ्करजीको मैं भजता हूँ ।।५।।

कलाओंसे परे, कल्याणस्वरूप, कल्पका अन्त (प्रलय) करनेवाले, सज्जनोंको सदा आनन्द देनेवाले, त्रिपुरके शत्रु सच्चिदानन्दघन, मोहको हरनेवाले, मनको मथ डालनेवाले कामदेवके शत्रु, हे प्रभो ! प्रसन्न हूजिये, प्रसन्न हूजिये ।।६।।

जबतक पार्वतीके पति आपके चरणकमलोंको मनुष्य नहीं भजते, तबतक उन्हें न तो इहलोक और परलोकमें सुख–शान्ति मिलती है और न उनके तापोंका नाश होता है । अतः हे समस्त जीवोंके अंदर (हृदयमें) निवास करनेवाले प्रभो ! प्रसन्न हूजिये ।।७।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ।।

श्लोक–रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।

श्रीराम–स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ।
नवकंज–लोचन, कंज–मुख, कर–कंज पद कंजारुणं ।।
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील–नीरद सुंदरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ।।

भजु दीनबंधु दिनेश दानव–दैत्यवंश–निकंदनं ।
रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ–नंदनं ।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग बिभूषणं ।
आजानुभुज शर–चाप–धर, संग्राम–जित–खरदूषणं ।।

इति वदति तुलसीदास शंकर–शेष–मुनि–मन–रंजनं ।
मम हृदय–कंज निवास कुरु, कामादि खलदल–गंजनं ।।
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सों बरु सहज सुंदर साँवरो ।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ।।

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ।।

सो०– जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ।।

।। सियावर रामचन्द्रकी जय ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'टीका'

मैं न तो योग जानता हूँ, न जप और न पूजा ही । हे शम्भो ! मैं तो सदा–सर्वदा आपको ही नमस्कार करता हूँ । हे प्रभो ! बुढ़ापा तथा जन्म (मृत्यु) के दुःखसमूहोंसे जलते हुए मुझ दुखीकी दुःखसे रक्षा कीजिये । हे ईश्वर ! हे शम्भो ! मैं आपको नमस्कार करता हूँ ।।८।।

भगवान् रुद्रकी स्तुतिका यह अष्टक उन शङ्करजीकी तुष्टि (प्रसन्नता) के लिये ब्राह्मणद्वारा कहा गया । जो मनुष्य इसे भक्तिपूर्वक पढ़ते हैं, उनपर भगवान् शम्भु प्रसन्न होते हैं ।।९।।

श्री राम वन्दना

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।

लोकाभिसमं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ।।

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे ।

रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।।

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं ।

सीतासमारोपितवामभागम् ।

पाणौ महासायकचारुचापं ।

नमामि रामं रघुवंशनाथम् ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Banthlab Jammu

श्रीहनुमान चालीसा

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि ।।

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन–कुमार ।
बल बुधि विद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार ।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।।
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि–पुत्र पवनसुत नामा ।।

महाबीर बिक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ।।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।
संकर सुवन केसरीनंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ।।

बिद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लषन सीता मन बसिया ।।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचंद्र के काज सँवारे ।।

लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना । लंकेस्वर भए सब जग जाना ।।
जुग सहस्र जोजन पर भानु । लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना । तुम रच्छक काहू को डर ना ।।

आपन तेज सम्हारो आपै । तीनों लोक हाँक तें काँपै ।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै । महाबीर जब नाम सुनावै ।।

नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।

सब पर राम तपस्वी राजा । तिन के काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोइ लावै । सोइ अमित जीवन फल पावै ।।

चारों जुग परताप तुम्हारा । है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे । असुर निकंदन राम दुलारे ।।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता । अस बर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा । सदा रहो रघुपति के दासा ।।

तुम्हरे भजन राम को पावै । जनम जनम के दुख बिसरावै ।।
अंत काल रघुबर पुर जाई । जहाँ जन्म हरि–भक्त कहाई ।।

और देवता चित्त न धरई । हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जै जै जै हनुमान गोसाईं । कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।।
जो सत बार पाठ कर कोई । छूटहि बंदि महा सुख होई ।।

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।।

==========

संकटमोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रबि भक्षि लियो तब तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को यह संकट काहु सों जात न टारो ।।

देवन आनि करी बिनती तब छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ।। १ ।।

बालि की त्रास कपीस बसै गिरि जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब चाहिय कौन बिचार बिचारो ।।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु सो तुम दास के सोक निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ।।२।।

अंगद के सँग लेन गये सिय खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय सिया–सुधि प्रान उबारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ।।३।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रावन त्रास दई सिय को सब राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीचर मारो ।।
चाहत सीय असोक सों आगि सु दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ।।४।।

बान लग्यो उर लछिमन के तब प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।।
आनि सजीवन हाथ दई तब लछिमन के तुम प्रान उबारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ।।५।।

रावन जुद्ध अजान कियो तब नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल मोह भयो यह संकट भारो ।।
आनि खगेस तबै हनुमान जु बंधन काटि सुत्रास निवारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ।।६।।

बंधु समेत जबै अहिरावन लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।।
जाय सहाय भयो तब ही अहिरावन सैन्य समेत सँहारो ।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ।।७।।

काज किये बड़ देवन के तुम बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को जो तुमसों नहिं जात है टारो ।।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो ।।
को नहिं जानत है जगमें कपि संकटमोचन नाम तिहारो ।।८।।

दो०—लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर ।।

।। इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बजरंग बाण

दोहा— निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करै सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान ।।

जय हनुमन्त सन्त हितकारी, सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ।
जन के काज बिलम्ब न कीजै, आतुर दौरि महा सुख दीजै ।

जैसे कूदि सिन्धु बहि पारा, सुरसा बदन पैठी बिस्तारा ।
आगे जाई लंकिनी रोका, मारेहु लात गई सुर लोका ।

जाय विभीषण को सुख दीन्हा, सीता निरखि परम पद लीन्हा ।
बाग उजारि सिन्धु महँ बोरा, अति आतुर यम कातर तोरा ।

अक्षय कुमार को मारि संहारा, लूम लपेटि लंक को जारा ।
लाह समान लंक जरि गई, जय जय धुनि सुर पुर महँ भई ।

अब बिलम्ब केहि कारण स्वामी, कृपा करहुँ उर अन्तर्यामी ।
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता, आतुर होई दुःख करहुँ निपाता ।

जय गिरिधर जय जय सुख सागर, सुरसमूह समरथ भटनागर ।
ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले, बैरिहिं मारु बज्र की कीले ।

गदा बज्र लै बैरिहिं मारो, महाराज प्रभु दास उबारो ।
ॐ कार हुंकार महावीर धावो, बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो ।

ॐ ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीसा, ॐ हुँ हुँ हुँ हनु अरिउर शीशा ।
सत्य होउ हरि सपथ पायके, रामदूत धरु मारु धाय के ।

जय जय जय हनुमन्त अगाधा, दुःख पावत जन केहिं अपराधा ।
पूजा जप तप नेम अचारा, नहिं जानत कछु दास तुम्हारा ।

बन उपवन मग गिरि गृह माहीं, तुमरे बल हम डरपत नाहीं ।
पाय परौं कर जोरि मनावों, यह अवसर अब केहि गोहरावों ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जय अंजनि कुमार बलवन्ता, शंकर सुवन धीर हनुमन्ता ।
बदन कराल काल कुल घालक, राम सहाय सदा प्रति पालक ।

भूत प्रेत पिशाच निशाचर, अग्नि बैताल काल मारीमर ।
इन्हें मारु तोहि सपथ राम की, राख नाथ मर्याद नाम की ।

जनक सुता हरि दास कहावो, ताकी शपथ बिलम्ब न लावो ।
जय जय जय धुनि होत अकाशा, सुमिरत होत दुःसह दुख नाशा ।

चरण शरण करि जोरि मनावों, यहि अवसर अब केहि गोहरावों ।
उठु उठु चलु तोहिं राम दोहाई, पायं परौं कर जोरि मनाई ।

ॐ चं चं चं चंपल चलन्ता, ॐ हनु हनु हनु हनुमन्ता ।
ॐ हँ हँ हांक देत कपि चंचल, ॐ सं सं सहम पराने खल दल ।

अपने जन को तुरत उबारो, सुमिरत होय आनन्द हमारो ।
यहि बजरंग बाण जेहि मारो, ताहि कहो फिरी कौन उबारो ।

पाठ करैं बजरंग बाण की, हनुमत रक्षा करैं प्राण की ।
यह बजरंग बाण जो जापै, तेहिते भूत प्रेत सब काँपै ।
धूप देय अरु जपै हमेशा, ताके तन नहिं रहे कलेशा ।

दोहा

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान ।
तेहि के कारज सकल शुभ सिद्धि करैं हनुमान ।।

''इति श्री बजरंगबाण समाप्त''

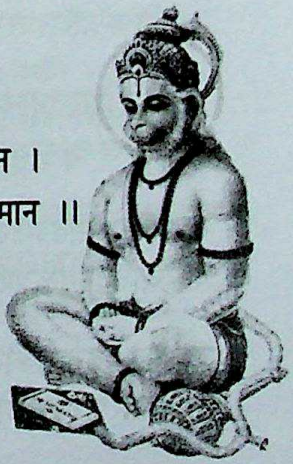

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीहनुमत् स्तवन

सो०— प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ।।

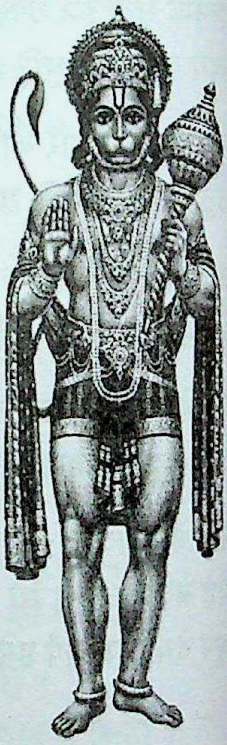

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।

सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ।।

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ।।

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ।।

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।

आदाय तेनैव ददाह लङ्कां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ।।

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीहनुमान्‌जीकी आरती

आरती कीजै हनुमान लला की । दृष्टदलन रघुनाथ कला की ।। टेक ।।
जाके बल से गिरिवर काँपै । रोग—दोष जाके निकट न झाँपै ।। २।।
अंजनि पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ।।२।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीय सुधि लाये ।। ३।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई । जात पवनसुत बार न लाई ।।४।।
लंका जारि असुर संहारे । सियारामजीके काज सँवारे ।।५।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि सजीवन प्रान उबारे ।।६।।
पैठि पताल तोरि जम—कारे । अहिरावन की भुजा उखारे ।।७।।
बायें भुजा असुर दल मारे । दहिने भुजा संतजन तारे ।।८।।
सुर नर मुनि आरती उतारे । जै जै जै हनुमान उचारे ।।९।।
कंचन थार कपूर लौ छाई । आरति करत अंजना माई ।।१०।।
जो हनुमान (जी) की आरति गावै । बसि बैकुंठ परमपद पावै ।।११।।

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ।।
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मैं 'म' काराय नमः शिवाय ।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ।।
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ।।
य (क्ष) ज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ।।
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।

।। इति ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेरणा पुञ्ज

१. निर्धन असहाय, विपत्ति ग्रस्त, वंचित एवं उपेक्षित वर्ग की सहायता करना न केवल पुण्य है बल्कि हमारा पुनीत कर्त्तव्य है ।

२. निरक्षता बहुत बड़ा अभिशाप है, निर्धनता एवं भूख व्यक्ति को अनेक कुमार्गों एवं व्यसनों की ओर घसीट ले जाते हैं ।

३. हमारे शास्त्रों में अनेक प्रकार के तप बताये गये हैं । उनमें से महत्त्वपूर्ण तप है निष्काम कर्म, सेवा, परोपकार । इसी तप को भगवान श्री कृष्ण ने गीता में 'कर्मयोग' कहा तथा ज्ञान, भक्ति और योग की भाँति इस साधना को भी भगवत्प्राप्ति, मोक्षप्राप्ति में समर्थ बताया ।

४. अपनों के प्रति उदारता तथा दूसरों की उपेक्षा करना अज्ञान है, माया है । जन्म–मरण का, शोक–कष्ट का उत्पीड़न व भ्रष्टाचार आदि पापों का यही मूल कारण है । भेदभाव और द्वेष ही मृत्यु है तथा अभेद भाव, अनेकता में एकता, सब में एक को देखना, सब की उन्नति चाहना ही जीवन है ।

५. समस्त बुराइयों का मूल है स्वार्थ और स्वार्थ अज्ञान से पैदा होता है । स्वार्थी मानव जीवन की वास्तविक उन्नति एवं ईश्वरीय शांति से बहुत दूर होता है । मनुष्य के वास्तविक कल्याण में स्वार्थ बहुत बड़ी बाधा है । जिसे निःस्वार्थ सेवा एवं सत्संग से निर्मूल किया जाता है । स्वार्थ मन को संकीर्ण तथा हृदय को संकुचित बना देता है । हृदय में 'मैं' और 'मेरे' की लघु ग्रंथि होने से सर्वव्यापक सत्ता की असीम सुख–शांति प्राप्त नहीं होती तथा हम अदभुत, पवित्र प्रेरणा नहीं पा सकते ।

६. निष्काम कर्म जीवन के परम लक्ष्य को पाने की पहली सीढ़ी है। इससे चित्त की शुद्धि होती है तथा भेदभाव मिटता है । ईश्वर की भावना दृढ़ होते ही 'अहं' की ग्रंथि टूट जाती है और सर्वत्र ईश्वरीय सत्ता से जीव का एकत्व हो जाता है । भगवद्भाव से सबकी सेवा करना सब से बड़ा तप है । अतः त्यागभाव से केवल कर्तव्यपालन के लिए ही विषयों का यथाविधि उपयोग करो तथा धन अथवा भोग्य पदार्थ में आसक्ति मत रखो ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

७. परमार्थ को साधने के लिए, कलह, अशांति तथा सामाजिक दोषों को निर्मूल करने के लिए विश्वप्रेम को विकसित करना अनिवार्य है । जिन का प्रेम विश्वव्यापी हो गया है उनके लिए सभी समान हैं । समस्त ब्रह्मांड उनका घर होता है ।

८. प्रकृति के मूल में त्याग की भावना निहित है । नि:स्वार्थ सेवा के द्वारा अद्वैत की भावना पैदा होती है । नि:स्वार्थ सेवा चित्त के दोषों को दूर करती है । सेवा का हेतु चित्त की शुद्धि, अहंकार, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा आदि बुरे भावों की निवृत्ति तथा भेदभाव की समाप्ति है । हृदय की विशालता द्वारा विश्व एकता स्थापित होती है ।

९. लोभी धन का चिंतन करता है, मोही परिवार का, कामी कामिनी का, भक्त भगवान का चिंतन करता है पर ज्ञानवान पुरुष परमात्मस्वरूप के ज्ञान से परमात्ममय हो जाते हैं । वे केवल सबके मंगल तथा भले की ही कामना करते हैं ।

१०. किसी के दिल को ठेस न पहुँचे, किसी का कहीं बुरा न हो, कोई हानि न हो इसका ध्यान रखते हुए जो कर्म किया जाता है वह यज्ञ है, पूजा है, उपासना है । ऐसा कर्म करने वाला साधक ही परमात्मा के समग्र रूप का साक्षात्कार कर सकता है ।

११. शुद्ध आचार–विचार वाले कल्याणमय पुरुष को कुसंग त्याग देना चाहिए ।

१२. असंतोषी, तृष्णावान पुरुष को बाहरी धन कभी तृप्त नहीं कर सकता क्योंकि तृष्णा कभी पूर्ण नहीं हो सकती । और संतोषरूपी अमृत को पीकर तृप्त, शांत पुरुष को जो सुख मिलता है वह सुख धन के पीछे जहां–तहां दौड़नेवाले अशांत व्यक्ति को कहाँ नसीब होता है । धन के त्याग में बड़ा कष्ट होता है । उसको रखने में भी सुख नहीं है तथा उसके खर्च करने में भी क्लेश ही होता है, अत: धन को प्रत्येक दशा में दु:खदायक समझकर उसके नष्ट होने पर चिंता नहीं करनी चाहिए ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१३. विद्वान पुरुष सदा संतुष्ट रहते हैं । संतोष ही परम सुख है । अत: पंडितजन इस लोक में संतोष को ही उत्तम धन कहते हैं । जिस समय तृष्णा हृदय पर कब्जा कर लेती है, उस समय व्यक्ति तुच्छ हो जाता है और जिस समय अनजाने में भी तृष्णा नहीं रहती, उस समय उसके चित्त में आनंद, प्रेम और दिव्यता छलकती है । संतोष की कमीवाला व्यक्ति ही निर्धन है और संतोषी व्यक्ति ही धनवान है । अत: ज्ञान का प्रकाश और विवेक का सहारा लेकर वासना को निवृत्त करने का यत्न करना चाहिए । सदैव अंतर्यामी ईश्वर पर भरोसा रखें । अपनी इच्छाएँ–वासनाएँ घटाते जायें और ईश्वरप्रीति बढ़ाते जायें ।

१४. यजुर्वेद मन्त्र ४०/१२ का प्रमाण है कि अविद्याग्रस्त पुरुष, जो अनात्मा को आत्मा मानने लगते हैं, वे अन्धकार रूप दु:ख सागर में पड़े सदा दु:खी रहते हैं ।

१५. विद्या का भाव है वेदमार्ग पर चलकर चेतन ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करना । सृष्टि रचना, पालन, संहार और पुन: सृष्टि का बनना यह अनादि अविनाशी एवं स्वाभाविक क्रिया है, जो ईश्वर के आधीन है ।

१६. ईश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यो ! उस पूर्ण पूजनीय सबके द्वारा ग्रहण करने योग्य, परमेश्वर से ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तथा यजुर्वेद उत्पन्न हुए हैं । तुम उन्हें जानो क्योंकि वे अनादि हैं । तथा वेदों में मूर्ति पूजा का विधान नहीं है । वेदों की निन्दा अर्थात् अपमान तथा वेदों का त्याग, वेद–विरुद्ध आचरण करने वाला नास्तिक कहलाता है । अत: जो ग्रन्थ वेद के विरुद्ध हैं वे प्रमाणिक ग्रन्थ नहीं कहे जाते। अथर्ववेद के अनुसार उनका त्याग करना चाहिए । वेद का ज्ञान प्राप्त किए बिना मनुष्य की बुद्धि ज्ञानवान् नहीं होती अत: अविद्याग्रस्त बुद्धि जड़ पदार्थ को ही चेतन मानकर जीवन व्यर्थ कर लेती है ।

१७. ऋग्वेद मन्त्र १०/१३५/१,२ में ईश्वरीय ज्ञान है कि हम अपने पिछले जन्मों में किए हुए शुभ–अशुभ कर्मों का फल सुख–दु:ख के रूप में इस जन्म में भोगने आए हैं तथा इस जन्म के किए हुए कर्मों का फल भविष्य में आने वाले जन्मों में भोगेंगे।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जीव कर्मफल की इच्छा, दुविधा, चिन्ता त्यागकर केवल पुरुषार्थी होकर वेदोक्त कर्म और नियमों को जाने एवं तदानुसार शुभ कर्म करने पर ध्यान केन्द्रित करे तो जिज्ञासु मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं ।

१८. महाभारत में व्यासमुनि लिखते हैं—काम—क्रोधादि दोषों से युक्त बुद्धि की प्रेरणा से मन पाप कर्म में प्रवृत्त होता है और नीच योनियों में गिरता है। मनुष्य अपने पूर्वजन्म के कर्मों का फल अकेला ही भोगता है । कर्मफल एक धरोहर के समान हैं । सम्मान एवं अपमान, लाभ और हानि तथा उन्नति एवं अवनति ये पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार बार—बार प्राप्त होते हैं और प्रारब्ध भोग के पश्चात् निवृत्त हो जाते हैं ।

१९. मनु स्मृति श्लोक १/२३ में कहा है — उस परमात्मा ने जगत् में समस्त अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष आदि व्यवहारों की सिद्धि के लिए अथवा जगत् के समस्त रूपों के ज्ञान के लिए अग्नि, वायु, रवि आदि ऋषियों को चारों वेदों का ज्ञान दिया । वेदों में तीन विद्याएँ हैं — ज्ञान काण्ड, कर्म काण्ड एवं उपासना काण्ड । छः ऋषियों ने छः शास्त्र अलग—अलग विषयों पर लिखे हैं और ये सभी वेद के तत्व ज्ञान को अपने—अपने क्षेत्र में व्यक्त करते हैं ।

२०. जिस परमेश्वर से समस्त जगत की उत्पत्ति, पालना एवं प्रलय होकर पुनः उत्पत्ति होती है, वह ब्रह्म है । व्यास मुनि जी ने महाभारत में ब्रह्म के दो अर्थ कहे हैं ।

१. शब्द ब्रह्म — वेद मन्त्रों का ज्ञान ।

२. पर ब्रह्म — अर्थात शब्द ब्रह्म को जानकर, उस पर आचरण करके ईश्वर की अनुभूति प्राप्त करना, यही मनुष्य जाति का परम लक्ष्य है, जीव कर्मानुसार मनुष्य का शरीर धारण करता है और कर्म फल भोगता है । परमात्मा शरीर में रहकर जीवात्मा के कर्मों को देखता है और कर्मानुसार उसे अगला जन्म देता है परन्तु स्वयं कर्म नहीं भोगता । अर्थात जीवात्मा पुण्य—पाप से उत्पन्न सुख—दुःख भोग को स्वादुपन से भोगता है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

२१. परमेश्वर तो एक ही है इसी परमेश्वर की पूजा करना योग्य है, परमेश्वर से उत्पन्न वेदों में ईश्वर ने स्वयं अपना स्वरूप, गुण, कर्म, स्वभाव प्रकट किए हैं – उनका उपदेश दिया है । अत: परमेश्वर को जानने के लिए वेदाध्ययन करने की आवश्यकता अनादिकाल से चली आई है । हमें ईश्वर को जानने के लिए पुन: वेदों की ओर लौटना होगा ।

२२. वेदों में ईश्वर ने असंख्य कर्म बताए हैं । जो मनुष्य, साधक, सेवक, गुरु के और ईश्वर के बचनों को सुनकर उन पर आचरण करता है, वही धन्य है क्योंकि ''कर्म फल'' महान् है इसलिए मनुष्य दु:ख में सदा शान्त रहे । अगर मनुष्य ईश्वर के लिए मन में शुभ संकल्प लेकर नित्य साधना, योगाभ्यास, नाम स्मरण, अग्निहोत्र और यज्ञानुष्ठान आदि कर्मों को करता है तो परम पिता परमात्मा उसी वक्त मनुष्य की सुनता है और उसका कर्मफल मनुष्य को शान्ति व सुख देता है। इसलिए मनुष्य हमेशा शुभ–शुभ कर्म ही करे । वस्तुत: बिना भोगे कर्मबन्धन से मनुष्य छूट नहीं पाता क्योंकि उसके मन, बुद्धि आदि रज, तम व सत् गुणों से ओत–प्रोत रहते हैं और वह निरन्तर साधना, यज्ञ, नाम–स्मरण आदि शुभ कर्म नहीं कर पाता । अत: मनुष्य को कभी भी पापयुक्त कर्म नहीं करना चाहिए ।

२३. वेदों में कर्म तीन प्रकार के बताए हैं –

१. संचित कर्म–जो जन्म जन्मान्तरों में किए हुए कर्मों का कुल योग हैं ।

२. क्रियामाण कर्म–जो इस वर्तमान के जीवन में हम करते हैं ।

३. प्रारब्ध कर्म–जो जन्म–जन्मान्तरों के किए हुए कर्मों के समूह से कुछ कर्म लेकर परमेश्वर ने वर्तमान जीवन में प्रारब्ध देकर प्रत्येक जीव को योनी प्रदान की है और भाग्यशाली वही है जिसे मनुष्य योनी मिलती है ।

२४. चारों वेदों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि मनुष्य के दो ही सर्वोत्तम सखा हैं – एक वेद का ज्ञाता विद्वान् और दूसरा तीनों लोकों को रचने वाला सर्वशक्तिमान परमेश्वर ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

२५. वेद कहता है—वस्तुतः वही पुरुष भाग्यशाली है जो कृतज्ञ तथा यर्थाथ वक्ता, मनुष्यों के लिए बुद्धि देने और अविद्या आदि कलेशों का नाश करने वाले, विद्वान् की सेवा करके विद्या प्राप्त करता है क्योंकि जो मनुष्य आलस्य आदि का त्याग करके, पुरुषार्थी, धार्मिक और जितेन्द्रिय होते हैं, उन्हीं को वेद विद्या और उत्तम शिक्षा प्राप्त होती है ।

२६. मनु स्मृति श्लोक ६/१०९ का उपदेश है—

''ज्ञानेन बुद्धि शुद्धयति''

अर्थात वैदिक ज्ञान प्राप्त करने से बुद्धि शुद्ध होती है इसलिए हम ज्ञान सुनें । वैदिक ज्ञान के अभाव में ही पृथ्वी पर अशुद्ध बुद्धि से दुष्कर्म हो रहे हैं ।

२७. ऋग्वेद मन्त्र २/२४/४ का भाव है कि योगाभ्यास के अभाव में बुद्धि नहीं बढ़ती और बुद्धि के बिना धन और आत्मा की सिद्धि नहीं होती । फलस्वरूप भ्रष्ट बुद्धि से भ्रष्ट कर्म करके जीव जीवन नष्ट कर लेता है ।

२८. अथर्ववेद मन्त्र ९/९/२ तथा कठोपनिषद् का उपदेश है कि इस शरीर रूपी रथ में दो कान, दो नासिका छिद्र, दो आँखें और जिह्वा, ये सात दीपक जुड़े हैं । इस में जीवात्मा रथ का स्वामी है, बुद्धि सारथी है, इन्द्रियाँ तथा मन मिलकर कोई कर्म करते हैं तब मनुष्य—जीवात्मा भोक्ता कहलाता है ।

२९. श्रीमद्भगवद्गीता में कहा है कि शरीर से इन्द्रियाँ परे अर्थात् बलवान्, इन्द्रियों से परे मन है, मन से परे बुद्धि और बुद्धि से परे अर्थात् बलवान् चेतन जीवात्मा है ।

३०. जब तक मनुष्य वैदिक मार्ग को नहीं अपनाते, वेद के ज्ञाता के आश्रय में रहकर वेदों का सुनना तदानुसार अष्टाँग योग की साधना, यज्ञ—अग्निहोत्र एवं ईश्वर के नाम का स्मरण नित्य नहीं करते, उनकी बुद्धि शुद्ध नहीं हो सकती एवं अशुद्ध बुद्धि से सांसारिक दुष्कर्म, काम—क्रोध आदि विषय—विकार में लिप्तता एवं अविद्याग्रस्त हुआ जीवात्मा जन्म—मरण के चक्कर में फंसा सदा दुःखी रहता है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

३१. गुणों के बिना रूप, विनम्रता के बिना विद्या, उपयोग के बिना धन, साहस के बिना शस्त्र तथा चेतन के बिना ऊर्जा व्यर्थ है । दूसरों को नीचा दिखाने में अपनी शक्ति का प्रयोग न करें । स्वयं खुश रहें और दूसरों में खुशी बांटें । प्रेम, करुणा और अपनापन सबके साथ बनाकर रखें । ईमानदार आदमी चट्टान की तरह मज़बूत होता है । उसके सामने पाप भी कांपने लगता है । बेईमान का लोक और परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं । बेईमान पर कोई विश्वास नहीं करता । बेईमान की कमाई घर आती है तो कई बुराईयाँ साथ लेकर आती है ।

३२. गीता के सोलहमे अध्याय में श्री कृष्ण जी कहते हैं, हे अर्जुन ! दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, कठोरता और अज्ञान—ये सब दुर्गुण उस व्यक्ति में विद्यमान रहते हैं जो पूर्व जन्म के कर्मों व संस्कारों के फलस्वरूप 'आसुरी सम्पदा' के लक्ष्णों को साथ लेकर ही जन्म लेता है । वे पुण: कहते हैं, कभी भी तृप्त न होने वाली लालसा का आश्रय लेकर दम्भ (पाखंड़) मान (घमंड़) और मद से युक्त, मोह के कारण असत् जगह रखने वाले दुष्ट, आसुरी इच्छाओं को ग्रहण कर अपवित्र संकल्प मन में रखकर ही कार्य में प्रवृत्त होते हैं ।

३३. कर्म (कार्य, Deed) को आमतौर पर लोग भ्रमित होकर किस्मत (Luck-Destiny) की संज्ञा दे देते हैं । श्रीमद् भगवद्गीता में निर्देश है कि भक्तिपूर्वक किया गया कर्म चिन्तन से श्रेष्ठ है । इन्द्रिय तृप्ति के लिए किया गया कर्म ही भवबन्धन का कारण है । भगवान कहते हैं—लोग इन्द्रिय तृप्ति के पीछे लगे रहते हैं, वह इस तथ्य को भूल जाते हैं कि उनका क्लेशों से युक्त शरीर उनके कर्मों के फल के कारण ही है । परिणामस्वरूप इन्द्रिय तृप्ति के लिए किए गए कर्म श्रेयस्कर नहीं होते । इसलिए जीवात्मा के स्तर पर मनुष्य को कर्म करना ही होगा, अन्यथा भवबन्धन से उबरने का कोई अन्य उपाय नहीं है । यदि हमारे कर्म प्रभु भावना युक्त होंगे तो, मुक्ति प्राप्त होगी ही, इसमें कोई भी संशय, भ्रम नहीं है । अत: यह नियम सदा याद रखो—जो जैसा करेगा, वह वैसा ही भरेगा ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

३४. धर्म

हमारे शास्त्रों में बहुत सुन्दर व्याख्या है–

धर्म शब्द (धु) धातु से बना है जिसको धारण किया जाये या जो धारण करने योग्य हो उसे धर्म कहते हैं ।

'धार्यत इति धर्म : । पतितं पतन्तं पतिष्यन्तं धरतीति धर्म:।' अर्थात् सारा प्रपञ्च जिसके द्वारा धारित होता है, जो गिरे हुए मनुष्यों को अवनति के मार्ग से बचा कर उन्नति (Progress) के मार्ग की ओर ले जाने की शक्ति धारण करता है, वही धर्म कहलाता है ।

धर्म शब्द के अर्थ अनेक हैं–जैसे कर्त्तव्य, नियम, कानून, स्वभाव, आचार, व्यवस्था, क्रिया–कांड़, आत्मशोधन की प्रक्रिया, फर्ज़, रीति–रिवाज आदि ।

'धर्मो विश्वस्य जगत: प्रतिष्ठा' । अर्थात् धर्म सम्पूर्ण विश्व का आधार है । धर्म परमात्मा का ही स्वरूप है । श्रद्धा के बिना धर्म नहीं होता । अपने स्वार्थ का त्याग और दूसरों को सुख पहुँचाने का नाम धर्म है ।

'परहित सरिसधर्म नहिं भाई । पर पीड़ा समनहिं अधमाई' ।

अर्थात हे भाई ! दूसरे के हित के समान कोई धर्म नहीं और दूसरों को पीड़ा देने के समान कोई अर्धम या पाप नहीं ।

धर्म के चार चरण हैं :– सत्य, दया, तप और दान ।

सत्य :– धर्म न दूसरा सत्य समाना ।
आगम निगम पुरान बखाना ।।
'सत्य बोलो, सद्विचार करो, सत्कर्म करो,
सद्व्यवहार करो, सत्य का पालन करो,
सत्य को कभी न छोड़ो, सत्संग करो ।

दया :– दया धर्म का मूल है पापमूल अभिमान ।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घट में प्राण ।।
कोई व्यक्ति कितना धार्मिक है उसकी पहचान दया से होती है । दया मन में न हो तो व्यक्ति धार्मिक नहीं है । वह प्रेम भी नहीं कर सकता बल्कि वह अभिमानी होता है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तप :— तप बहुत बड़ी शक्ति है, तप का उलट पत है । जो तप में र
है उसकी पत भगवान रखता है । धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, तप के ही अधी
है । तप के बल से ही ब्रह्मा जगत की रचना करते हैं, विष्णु जगत की रक्ष
करते हैं, शिवजी संहार करते हैं और शेष पृथ्वी का भार धारण करते हैं
तप के सहारे सारी सृष्टि है ।

दान :— दान से धन की शुद्धि होती है । दान धर्म के बैंक में अप
धन जमा करवाना है । दान करने से धन बढ़ता है घटता नहीं
कलियुग मेंकेवल दान रूपी चरण ही प्रधान है ।

धर्म के दस लक्षण (अंग) बताए हैं । :—

१. धृति (धैर्य) सन्तोष
सुख–दुख, भूख–प्यास, मान–अपमान, सहन करने की शक्ति
और कष्ट पाकर भी धर्म का त्याग न करना धीरज है ।

२. क्षमा : निर्बल पर क्रोध न करना, अपराधी पर भी दया करके मीठ
वाणी से समझाकर शान्त कर देना तथा अपनी भूल पर क्षमा मां
लेना बड़ा गुण है ।

३. दम : मन को बुरे विकारों से मोड़कर अपने वश में करना ।

४. अस्तेय : मन, वाणी, शरीर से चोरी न करना ।

५. शौच : भीतर और बाहर से पवित्र होना ।

६. इन्द्रिय निग्रह : दशों इन्द्रियों को कुमार्ग से हटाना तथा सन्मार्ग प
लगाना ।

७. धी : (बुद्धि) मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ ।

८. विद्या : ब्रह्मविद्या का अनुशीलन करना जो बन्धन से मुक्ति
दिलाती है ।

९. सत्य : सर्वदा देखी, सुनी और बरती बातों को मधुर और प्रिय
वाणी से कह देना ।

१०. अक्रोध : क्रोध न करना क्योंकि क्रोध धर्म को दूर कर देता है और
बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है । बुद्धि के नाश होने से मनुष्य का
सर्वनाश होता है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
महाभारत की एक कथा के अनुसार यक्षराज के प्रश्नों के उत्तर में महाराज युधिष्ठिर ने धर्म की परिभाषा समझाई है :—

ईश्वर ने मनुष्य मात्र के लिए धर्म बनाया है । ऋषियों के कथनानुसार जिस से इस लोक के लिए सुख मिले और परलोक में कल्याण हो, वही धर्म है । धर्म पर चलने से धर्म हमारी रक्षा करेगा । तथा सब प्राणियों को एक समान देखना ही धर्म है । धर्म की नींव सत्य और सदाचार पर बनी है । इसके बिना धर्म बेजान हो जाता है । धर्म पर चलना ही सदाचार है । सत्य स्वयं ईश्वर है ।

धर्म का पालन, अपने आचरण या चाल—चलन को अच्छा बनाना ही है । हमें सदाचारी बनना चाहिए । आपस में शिष्टाचार रखना चाहिए ।

३५ धर्म के ११ अंग (नियम) हैं ।

यश, सत्य, दम (मन को वश में रखना), क्षमा, पवित्रता, हृदय में कुटिलता न रखना, लज्जा, संतोष, दान, तप और ब्रह्मचर्य ।

— ईश्वर ने इस जगत में सुख का तालाब बना रखा है । इसका रक्षक और मालिक धर्म है । धर्म का पालन करने वाला ही सदाचारी है । माता—पिता—गुरु की आज्ञा मान कर ही सदाचारी बना जा सकता है। सदाचारी सदा निरभिमानी, सुशील, नम्र, प्रोपकारी और देश भक्त होता है। अत: सदाचारी बनकर शिष्टाचार बरतना धर्म के अनुसार पर्म कर्त्तव्य है जिस से संसार में यश तथा कीर्ति मिलती है ।

३६ सांझेदारी करो तो किसी के दर्द की करो,
क्योंकि खुशियों के दावेदार तो बहुत हैं ।

३७ कागजों को एक साथ जोड़े रखने वाली पिन ही कागज़ों को चुभती है,
उसी प्रकार परिवार को भी वही व्यक्ति चुभता है, जो परिवार को जोड़ के रखता हो ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

३८ वक्त कहता है मैं फिर न आऊँगा,
मुझे खुद नहीं पता तुझे हंसाऊँगा या रुलाऊँगा,
जीना है तो इस पल को जी ले,
क्योंकि मैं किसी भी हाल में इस पल को,
अगले पल तक रोक न पाऊँगा ।
सदा मुस्कुराते रहिये ।

३९ जिंदगी जब हंसाये तो समझ लेना कि अच्छे कर्मों का फल मिल रहा है, और जब रुलाये तो समझ लेना अच्छे कर्म करने का समय आ गया है ।

४० भरोसा खुद पर रखो तो ताकत बन जाती है ।
और दूसरों पर रखो तो कमज़ोरी बन जाती है ।
आप कब सही थे इसे कोई याद नहीं रखता ।
लेकिन आप कब गलत थे इसे सब याद रखते हैं ।

४१ छोड़िए शिकायत, शुक्रिया अदा कीजिये
जितना है पास, पहले उसका मज़ा लीजिये
चाहे जिधर से गुज़रिये, मीठी सी हलचल मचा दीजिये,
उम्र का हर एक दौर मज़ेदार है
अपनी उम्र का मज़ा लीजिये ।

४२ सुलझा हुआ मनष्य वह है,
जो अपने निर्णय स्वयं करता है, और
उन निर्णयों के परिणाम के लिए किसी दूसरे को दोष नहीं देता ।

४३ खुश रहना है तो अधिक ध्यान उस चीज़ पर दें,
जो आपके पास है.....
उस पर नहीं जो दूसरों के पास है ।

४४ इस संसार में सब से बढ़िया दवा हंसी है
सब से बड़ी सम्पत्ति बुद्धि
सब से बड़ा हथियार धैर्य, सब से अच्छी सुरक्षा विश्वास और आनन्द की बात यह है कि ये सब निशुल्क हैं ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

४५ परिस्थियों के अनुसार सब चीज़ सुंदर है जो स्कूल की घंटी सुबह के समय बेकार लगती है वही छुट्टी के समय बहुत अच्छी लगती है।

४६ संघर्ष प्रकृति का आमन्त्रण है ।
जो स्वीकार करता है, वही आगे बढ़ता है ।।
मेहनत करे तो धन बने, सबर करे तो काम,
मीठा बोले तो पहचान बने,
और इज्ज़त करे तो नाम ।।

४७ आशाएं ऐसी हों जो मंज़िल तक ले जाएँ,
मंज़िल ऐसीं हो जो जीवन जीना सिखा दे ।
जीवन ऐसा हो जो संबंधों की कदर करे,
और संबंध ऐसे हों जो याद करने को मजबूर कर दें ।।

४८ इच्छाएँ पूरी नहीं होती हैं तो क्रोध बढ़ता है,
और इच्छाएँ पूरी होती हैं तो लोभ बढ़ता है ।
इसलिए जीवन की हर तरह की परिस्थिति में धैर्य बनाये रखना ही श्रेष्ठता है ।

४९ चार से विवाद मत करे !!
मूर्ख से, पागल से, गुरु से और माता पिता से ।
चार से शर्म नहीं करना !!
पुराने कपड़े में, गरीब साथियों में,
बूढ़े माता–पिता में और सादे रहन सहन में ।

''सुन्दर वर्णन''

५० मस्तक को थोड़ा झुकाकर देखिए, अभिमान मर जाएगा ।
आँखों को थोड़ा भिगा कर देखिए, पत्थर दिल पिघल जाएगा ।
दाँतों को आराम देकर देखिए, स्वास्थ्य सुधर जाएगा ।
जिव्हा पर विराम लगा कर देखिए, क्लेश का कारवाँ गुज़र जाएगा।
इच्छाओं को थोड़ा घटाकर देखिए, खुशियों का संसार नज़र आएगा।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

५१ वक्त हमेशा परखता है, कभी हालात के रूप में,
कभी मजबूरियों के रूप में ।।
भाग्य तो केवल आपकी कावलियत देखता है,
जीवन में कभी किसी से,
अपनी तुलना मत करो,
आप जैसे हैं, सर्वश्रेष्ठ हैं ।

५२ 'व्यवहार' घर का शुभ कलश है ।
और 'इन्सानियत' घर की तिजोरी ।
'मधुर वाणी' घर की धन–दौलत है ।
और 'शाँति' घर की 'महा लक्ष्मी' ।
'पैसा' घर का 'मेहमान' है ।
और 'एकता' घर की ममता है ।
''व्यवस्था'' घर की शोभा है ।
और समाधान 'सच्चा सुख' ।

५३ सुख केवल सब कुछ पा लेने में नहीं है बल्कि जो है उसमें संतोष कर लेने में है । जीवन में सुख तब नहीं आता जब हम ज़्यादा पा लेते हैं बल्कि तब ही आता है जब और पाने का भाव हमारे अंदर से चला जाता है और ज़्यादा पाने की चाहत मिट जाती है । सुख बाहर की नहीं, अंदर की संपदा है ।

५४ लोभ, शोक, भय, क्रोध, अहंकार, निर्लज्जता, ईर्ष्या, अतिराग, अभिध्या (दूसरे का धन लेने की इच्छा) आदि मानस वेगों को बुद्धिमान रोकता है क्योंकि इन वेगों को न रोकने और इनके वश में होकर आचरण करने वाला मानसिक रोगों का शिकार हो जाता है ।

५५ पुरुषार्थ और पुण्यों की वृद्धि से लक्ष्मी आती है, दान, पुण्य और कौशल से बढ़ती है तथा संयम और सदाचार से स्थिर होती है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

५६ गीता (16-1-4) में वर्णन मिलता है कि दैवी सम्पदा में निर्भयता, अंत:करण की पूर्ण निर्मलता, ज्ञान के लिए योग में दृढ़ स्थिति, दान, इन्द्रियों का दमन, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, सरलता, अहिंसा, सत्यभाषण, अक्रोध, त्याग, राग–द्वेष का अभाव, चुगली न करना, दया, अलोलुपता, मृदुता, लज्जा, चपलता का अभाव, तेज, क्षमा, धैर्य, पवित्रता, वैरभाव का न होना, मान को न चाहना–इन सद्गुणों का समावेश होता है । आसुरी सम्पदा में दम्भ करना, घमंड़ करना, अभिमान करना, क्रोध, कठोरता रखना, अविवेक का होना–इन दुर्गुणों का समावेश होता है ।

५७ महर्षि वेदव्यासजी राजा जनमेजय से कहते हैं कि दान, व्रत, यज्ञ और तपस्या–ये सभी पुण्यमय कर्म हैं । तीर्थ, तप और दान द्रव्यशुद्धि, क्रियाशुद्धि और मन:शुद्धि के ऊपर निर्भर हैं । द्रव्यशुद्धि और क्रियाशुद्धि जल्दी प्राप्त हो जाती है परंतु मन की शुद्धि प्राय: सबके लिए दुर्लभ है क्योंकि यह चंचल मन अनेक विषयों और दुर्भावों में अटका हुआ है वह शुद्ध कैसे हो सकता है ?

काम, क्रोध, लोभ, मद और अहंकार–ये सभी तप, तीर्थ एवं व्रत में विघ्न ड़ालते हैं अत: अपना व्यवहार ऐसा हो कि किसी प्राणी की हिंसा न हो, मुख से सत्य वाणी निकले, चोरी न हो, मन पवित्र रहे और इन्द्रियां काबू में रहें । देह–संबंधी मैल तो तीर्थों में धुलती है पर मन के मैल को धोने की शक्ति उन में नहीं । चित्तशुद्धि–तीर्थ, गंगा आदि तीर्थों से भी अधिक पवित्र माना जाता है पर यह तीर्थ आत्मज्ञानी पुरुषों के सत्संग के श्रवण मात्र से ही प्राप्त होता है ।

५८ वक़्त हँसाता है वक़्त रुलाता है, वक़्त ही बहुत कुछ सिखाता है ।
वक़्त की कीमत जो पहचान ले, वही मंज़िल को पाता है,
खो देता है जो वक़्त को जीवन भर पछताता है
क्योंकि गुज़रा हुआ वक़्त कभी लौटकर नहीं आता है ।

५९ मन के अनुकूल हो तो ''हरि कृपा''
मन के विपरीत हो तो ''हरि इच्छा''
इस तथ्य को धारण कर लें तो जीवन में आनंद ही आनंद है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

६० कभी–कभी उदासी की आग है ज़िंदगी,
कभी–कभी खुशियों का भाग है ज़िंदगी,
हंसाता और रुलाता राग है ज़िंदगी,
कड़वे और मीठे अनुभवों का स्वाद है ज़िंदगी,
पर अंत में तो अपने किये हुए कर्मों का हिसाब है ज़िंदगी ।

६१ यकीन करना सीखो
शक तो सारी दुनिया करती है ।
ज़िन्दगी जब देती है तो एहसान नहीं करती,
और जब लेती है तो लिहाज़ नहीं करती ।

६२ दुनिया में ''दो पौधे'' ऐसे हैं, जो कभी मुरझाते नहीं
और अगर जो मुरझा गए तो उसका कोई इलाज नहीं ।
पहला – ''निर्स्वाथ प्रेम''
दूसरा – ''अटूट विश्वास''

६३ समय और स्थिति कभी भी बदल सकती हैं, अत: कभी किसी का अपमान ना करें..... ना ही किसी को तुच्छ समझें । आप शक्तिशाली हो सकते हैं पर समय आपसे अधिक शक्तिशाली है ।

६४ प्रसन्न व्यक्ति वह हैं जो निरंतर स्वयं का मूल्यांकन करते हैं । और दु:खी व्यक्ति वह हैं जो सदैव दूसरों का मूल्यांकन करते हैं ।

६५ बेटा वारिस है, बेटी पारस है ।
बेटा वंश है, बेटी अंश है ।
बेटा आन है, बेटी शान है ।
बेटा तन है, बेटी मन है ।
बेटा मान है, बेटी गुमान है ।
बेटा संस्कार है, बेटी संस्कृति है ।
बेटा राग है, बेटी बाग है ।
बेटा दवा है, बेटी दुआ है ।
बेटा भाग्य है, बेटी विधाता है ।
बेटा शब्द है, बेटी अर्थ है ।
बेटा गीत है, बेटी संगीत है ।
बेटा प्रेम है, बेटी पूजा है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

६६ क्रोध में बोला हुआ केवल एक कठोर शब्द इतना ज़हरीला बन सकता है कि आपकी हज़ार प्यारी बातों को एक ही क्षण में नष्ट कर सकता है । इसलिए कम बोलें, धीरे बोलें और मीठा बोलें ।

जीवन मंत्र

नल बंद करने से नल बंद होता है। -पानी नहीं।

घड़ी बंद करने से घड़ी बंद होती है। -समय नहीं।

दीपक बुझाने से दीपक बुझता है। -रोशनी नहीं।

झूठ छुपाने से झूठ छुपता है। -सच नहीं।

प्रेम करने से प्रेम मिलता है। -नफ़रत नहीं।

दान करने से अमीरी मिलती है। -गरीबी नहीं।

६७ निराश होना, चिड़चिड़ाना, चिन्ता करना, बड़बड़ाना, दूसरे की निन्दा करना और अपना रोना रोते रहना – यह सब सड़े हुए विचार हैं, मन के रोग हैं, वे हमारे मस्तिष्क की दुर्दशा को प्रकट करते हैं, और जो इस रोग से पीड़ित हों उनको अपने विचार और व्यवहार का सुधार करना आवश्यक है ।

६८ जिस के पास कुछ नहीं होता है,
उस पर हँसती है दुनिया,
जिस के पास सब कुछ हो,
उस पर जलती है दुनिया,
मेरे पास आप जैसे अनमोल रिश्ते हैं,
जिस के लिए तरसती है दुनिया ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education, Bantalab, Jammu

६९ P शब्द इन्सान को बहुत प्रिय है, हम जिन्दगी भर P के पीछे भागते रहते हैं। जो मिलता है वह P से और जो नहीं मिलता वह भी P से..

P से पति, P से पत्नी, P से पुत्र
P से पुत्रि, P से परिवार, P से प्रेम
P से पैसा, P से पद, P से प्रतिष्ठा
P से प्रशंसा, P से प्यार, P से पार्टी
P से परीक्षा, P से पब्लिसिटी

इन सब P के पीछे पड़ते–पड़ते हम P से पाप भी करते हैं । फिर हमारा P से पतन होता है और अन्त में बचता है सिर्फ P से पछतावा....
अत: पाप के पीछे पड़ने से अच्छा है हम P से परमात्मा के पीछे पड़ें और P से पुण्य कमायें ।अन्त में P से प्रणाम ।

❋❋❋

न चादर बड़ी कीजिये, न ख्वाहिशें दफन कीजिये,
चार दिन की जिन्दगी है, बस चैन से बसर कीजिये।

❋❋❋

न परेशान किसी को कीजिये, न हैरान किसी को कीजिये,
कोई लाख गलत भी बोले, बस मुस्करा कर छोड़ दीजिये।

❋❋❋

न रूठा किसी से कीजिये, न झूठा वादा किसी से कीजिये,
कुछ फुरसत के पल निकालिये, कभी खुद से भी मिला कीजिये।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

७० हमारा व्यवहार ही हमारा प्रतिबिंब है । यदि प्यार चाहते हो तो प्यार देना पड़ेगा । सम्मान चाहते हो तो सम्मान देना पड़ेगा । विश्वास चाहिए तो विश्वास करना पड़ेगा ।

७१ जो केवल अपना भला चाहता है **वह दुर्योधन है,**
जो अपनों का भला चाहता है, **वह युधिष्ठर है,**
और जो सबका भला चाहता है, **'' वह श्री कृष्ण जी हैं''** ।
परमात्मा को सब से करीबी दोस्त बनाएँ क्योंकि परमात्मा ही एक ऐसे हैं जो तब साथ देते हैं जब सारी दुनिया विपत्ति के समय में हमारा साथ छोड़ देती है ।

❋❋❋

७२ *कभी-कभी उदासी की आग है ज़िन्दगी,*
कभी-कभी खुशियों का बाग है ज़िन्दगी,
हंसाता और रूलाता राग है ज़िन्दगी,
कड़वे और मीठे अनुभवों का स्वाद है ज़िन्दगी ,
पर अंत में तो अपने किये हुए कर्मों का हिसाब है ज़िन्दगी।

❋❋❋

७३ *व्यक्ति का व्यवहार देखना हो तो उसे सम्मान दो,*
आदत देखनी हो तो उसे स्वतंत्र कर दो,
और अगर उसके गुण देखने हों तो
उसके साथ कुछ समय बिताओ।

७४ **''ज़िन्दगी'' एक प्रॉजेक्ट है और ''रिश्ते'' एक टारगेट,**
''वाइफ'' ड़ेली रिपोर्टिंग है और ''औलाद'' इनसेंटिव,
''जवानी'' एक कमिटमेंट है और ''बुढ़ापा'' एचीवमेंट, लेकिन
''मित्रता'' सैलरी है और ''सैलरी को कोई कभी नहीं भूलता,
जो वक्त के साथ बढ़ती ही जाती है, और ''पुरानी मित्रता'' पेंशन की तरह है जो रिटायरमेंट के बाद भी चलती रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

७५ परमात्मा शब्द नहीं जो तुम्हें किताब में मिलेगा,
परमात्मा मूर्ति नहीं जो तुम्हें मंदिर में मिलेगी,
परमात्मा इंसान नहीं जो तुम्हें समाज में मिलेगा,
परमात्मा जीवन है जो तुम्हें अपने भीतर मिलेगा।

७६ नम्रता से बात करना, हर एक का आदर करना, शुक्रिया अदा करना, और मॉफी माँगना ये गुण जिसके पास हैं वो सदा सबके करीब और सबके लिए खास है ।

७७ इंसान घर बदलता है, लिबास बदलता है,
रिश्ते बदलता है, दोस्त बदलता है,
फिर भी परेशान क्यों रहता है ?
क्योंकि वह खुद को नहीं बदलता।

७८ मिर्ज़ा गालिब ने खूब कहा है, उम्र भर गालिब यही भूल करता रहा, धूल चेहरे पर थी और आयना साफ करता रहा ।

७९ शरीर से कोई सुन्दर नहीं होता । सुन्दर होते हैं व्यक्ति के कर्म, उसका विचार, उसकी वाणी, उसका व्यवहार, उसके संस्कार और उसका चरित्र ।

जिसके जीवन में ये सब हैं वही इंसान दुनिया का सबसे सुन्दर व्यक्ति है ।

८० दौलत से सुविधायें मिलती हैं सुख नहीं । सुख मिलता है तो आपस के प्यार से और अपनों के साथ से । अगर सुविधाओं से सुख मिलते तो कोई पैसे वाला कभी दुखी न होता ।

सुन्दर पंक्तियाँ

८१ इतनी 'ऊँचाई' न देना प्रभु कि, धरती पराई लगने लगे ।
इतनी 'खुशियाँ' भी न देना कि, 'दुःख' पर किसी के हँसी आने लगे ।।

नहीं चाहिए ऐसी 'शक्ति' जिस का, 'निर्बल' पर प्रयोग करूँ ।
नहीं चाहिए ऐसा 'भाव' कि, किसी को देख 'जल–जल' मरूँ ।।

ऐसा 'ज्ञान' मुझे न देना, अभिमान जिसका होने लगे ।
ऐसी 'चतुराई' भी न देना, जो लोगों को छलने लगे ।।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

८२ लालची व्यक्ति को वस्तु भेंट करके,
कठोर व्यक्ति को हाथ जोड़कर,
मूर्ख को सम्मान देकर, और
विद्वान को सच बोलकर संतुष्ट करना चाहिए ।

साथ ही : अपने रहस्यों को किसी के साथ सांझा न करो, यदि आप अपने रहस्यों को छिपा नहीं सकते, तो दूसरे इसका लाभ नहीं उठाएंगे ऐसी अपेक्षा करना भी मूर्खतापूर्ण है ।

८३ गीता में कहा गया है कि जब सत्य की असत्य से लड़ाई होगी तो सत्य अकेला खड़ा होगा और असत्य की फौज लम्बी होगी क्योंकि असत्य के पीछे मूर्खों का झुँड़ भी होगा ।

८४ 'अनुमान' गलत हो सकता है पर 'अनुभव' कभी गलत नहीं होता क्योंकि 'अनुमान' हमारे मन की कल्पना है और 'अनुभव' हमारे जीवन की सीख है । अच्छा वक़्त उसी का होता है जो किसी का बुरा नहीं सोचते हैं ।

८५ दुनियाँ में दान जैसी कोई संपत्ति नहीं,
लालच जैसा कोई और रोग नहीं,
अच्छे स्वभाव जैसा कोई आभूषण नहीं
और संतोष जैसा और कोई सुख नहीं ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

८६ जीवन से जो भी मिले उसे पचाना सीखो क्योंकि भोजन न पचने से चर्बी बढ़ती है, पैसा न पचने पर दिखावा बढ़ता है, बात न पचने पर चुगली बढ़ती है, प्रशंसा न पचने से अहंकार बढ़ता है, निंदा न पचने पर दुश्मनी बढ़ती है, राज़ न पचने पर खतरा बढ़ता है, दुःख न पचने पर निराशा बढ़ती है और सुख न पचने पर पाप बढ़ता है ।

८७ मित्रता ऐसी हो जैसे हाथ और आँख, क्योंकि हाथ को चोट लगने पर आँखों में पानी आ जाता है और आँखों में पानी आये तो उसे पोंछने को हाथ ही आगे आते हैं ।

८८ स्वामी विवेकानन्द कहते हैं :—

''कि तुम मुझे पसंद करो या मुझसे नफ़रत, दोनों ही मेरे पक्ष में हैं।'' क्योंकि अगर तुम मुझको पसंद करते हो तो, मैं आपके दिल में हूँ और यदि तुम मुझ से नफ़रत करते हो, तो मैं आपके दिमाग में हूँ पर रहूँगा आपके पास ही ।

८९ गुरु वही श्रेष्ठ होता है जिसकी प्रेरणा से किसी का चरित्र बदल जाये, और मित्र वही श्रेष्ठ होता है जिसकी संगत से रंगत बदल जाये ।

९० रिश्ते खून के नहीं होते, विश्वास के होते हैं

अगर विश्वास हो तो पराये भी अपने हो जाते हैं और अगर विश्वास न हो तो अपने भी पराए हो जाते हैं ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

९१ पृथ्वी पर बहुत सारे तीर्थ स्थान हैं, सब तीर्थों की यात्रा या संपूर्ण नदियों में जाकर मनुष्य स्नान नहीं कर सकता, मगर जहां कीर्तन होता है, हरि की कथा होती है, सत्संग होता है, वहां संपूर्ण तीर्थ विद्यमान होते हैं । इसलिए कहा गया है – अन्न का कण और सत्संग का क्षण कभी नहीं गंवाना चाहिए । जहां से मिले, जब मिले, जहां मिले, छोड़ना नहीं चाहिए।

९२ काल चक्र के नियम

१ बचपन : समय है, शक्ति है, लेकिन पैसा नहीं है ।

२ युवावस्था : शक्ति है, पैसा है, लेकिन समय नहीं है ।

३ बुढ़ापा : पैसा है, समय है, लेकिन शक्ति नहीं है ।

प्रकृति लाजवाब है !! इसलिए प्रतिदिन हर्ष, उल्लास, खुशी में जीवन बिताएं ।

९३ जो व्यक्ति दूसरों को सहारा देता है, उसे अपने लिए सहारा मांगना नहीं पड़ता, परमात्मा खुद ही दे देता है । किसी प्यासे को पानी पिलाने का, किसी गिरे हुए को उठाने का और किसी भूले हुए को राह दिखाने का मौका मिल जाए तो चूकना मत, क्योंकि ऐसा करने से हम बहुत से पापों से मुक्त हो सकते हैं ।

९४ स्वर्ण कितना भी मूल्यवान क्यों न हो, किन्तु सुगंध पुष्पों से ही आती है । श्रंगार के लिये दोनों का ही जीवन में महत्त्व है ।
इसी प्रकार ज्ञान कितना भी मूल्यवान क्यों न हो, किन्तु उसकी सुगंध बिना आचरण के नहीं आ सकती ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज्ञान के मोती

९५ तीन बातें कभी न भूलें :–

प्रतिज्ञा करके, कर्ज़ लेकर और विश्वास देकर तीन बातें करो : उत्तम के साथ संगती, विद्वान् के साथ वार्तालाप और सुहृदय के साथ मैत्री ।

– तीन अनमोल वचन :–

धन गया तो कुच्छ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और चरित्र गया तो सब गया ।

– तीन से घृणा न करो :–

रोगी से, दुखी से और निम्न जाती से ।

– तीन के आँसू पवित्र होते हैं :–

प्रेम के, करुणा के और सहानुभूती के ।

– तीन बातें सुखी जीवन के प्रति :–

अतीत की चिंता मत करो, भविष्य का विश्वास न करो

वर्तमान को व्यर्थ मत जाने दो ।

– तीन चीज़ें किसी का इन्तज़ार नहीं करतीं :–

समय, मौत, ग्राहक ।

– तीन चीज़ें जीवन में एक बार ही मिलती हैं :–

माँ, बाप, जवानी ।

– तीन चीज़ें पर्दे योग्य हैं :–

धन, स्त्री, भोजन

– तीन चीज़ों से सदा सावधान रहिए :–

बुरी संगत, परस्त्री, निन्दा

– उन्नति के लिए तीन चीज़ें :–

ईश्वर का ध्यान, परिश्रम और विद्या

– तीन चीज़ों को कभी छोटी न समझें :–

बीमारी, कर्ज़ा और शत्रु

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- तीन चीज़ें वापिस नहीं आती :—
  तीर कमान से, बात ज़ुबान से और प्राण शरीर से ।
- तीन को सदा वश में रखो :—
  मन, काम, और लोभ
- तीन चीज़ें कमज़ोर बना देती हैं :—
  बदचलनी, क्रोध, और लालच
- तीन चीज़ें कोई चुरा नहीं सकता :—
  अकल, चरित्र, और हुनर
- तीन समय पर पहचाने जात हैं :—
  स्त्री, भाई, और दोस्त
- तीन का सम्मान करो :—
  माता, पिता, और गुरु
- तीन पर सदा दया करो :—
  बालक, भूखे, और पागलपर
- तीन को मत भूलो :—
  कर्ज़, मर्ज़, और फर्ज़
- तीन बातों को कभी मत भूलो :—
  उपकार, उपदेश, और उदारता
- तीन को सदा याद रखो :—
  सच्चाई, कर्त्तव्य और मृत्यु
- तीन बातें चरित्र को गिराती हैं :—
  चोरी, निंदा और झूठ
- तीन को सदा दिल में रखो :—
  नम्रता, दया और माफ़ी ।

९६ कहीं मिलेगी प्रशंसा तो कहीं नाराज़गियों का बहाव मिलेगा ।
कहीं मिलेगी दुआ तो कहीं भावनाओं में दुर्भाव मिलेगा ।
तू चला चल राही अपने कर्मपथ पे,
जैसा तेरा भाव वैसा प्रभाव मिलेगा ।

CC-0. Jammu Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

९७– कुछ कह गए, कुछ सह गए,
कुछ कहते–कहते रह गए,
मैं सही तुम गलत के खेल में,
न जाने कितने रिश्ते ढ़ह गए ।

९८– मनुष्य के पास सब से बड़ी पूंजी अच्छे विचार हैं । क्योंकि धन और बल किसी को भी गलत राह पर ले जा सकते हैं किन्तु अच्छे विचार सदैव अच्छे कार्यों के लिए ही प्रेरित करते हैं ।

९९– धन की इच्छा, स्त्री–भोग की इच्छा, स्वादिष्ट भोजन की इच्छा, कुटुम्ब के भरण–पोषण की इच्छा और यश तथा मान–प्राप्ति की इच्छा–ये पांच जिसमें नहीं होती, उसे सच्ची शान्ति मिलती है । इन पाँचों में से यदि एक भी होगी तो सच्ची शान्ति नहीं आने देगी । इसलिए धीरे–धीरे प्रयत्न करके इन पाँचों का त्याग करो। तुम दूसरों को पढ़ाते हो, दूसरों के सुधार की चेष्टा करते हो, दूसरों को उपदेश देते हो, परंतु तुम अपने मन को तो देखो । तुम्हारे मनमें उपर्युक्त पाँचों के गये बिना तुम्हें सुख मिलेगा ही नहीं ।

१००–त्याग तप है । त्याग के बिना न तेज है, न सत्कार है, न शान्ति है, न प्रसन्नता है, न आनन्द है और न मुक्ति ही है । त्याग करो–घर का नहीं, स्त्री–पुत्रों का या धन का नहीं । त्याग करो क्रोध का, विषय–भोग का, मन की विविध कामनाओं का, दूसरे को दुःख देने वाले स्वभाव का, आलस्य का, अभिमान का, आसक्ति का, ममता का और अहंता का ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१०१– हर्ष और आनन्द में भेद है :— इन्द्रियों के अनुकूल भोग की प्राप्ती से हर्ष होता है और हर्ष के मोहका परिणाम शोक होता है । इसीलिए भोग से मन और इन्द्रियाँ कभी प्रसन्न होते ही नहीं । मन जब आत्मा में लीन होता है, तभी मन, इन्द्रियाँ आनन्द का अनुभव करती हैं । आनन्द आत्मा में है । आत्मा आनन्दस्वरूप है । जगत् के किसी भी भोग में आनन्द नहीं है ।

१०२– फल की इच्छा और कर्म की आसक्ति का त्याग इन दोनों के लिये गीता में विशेष आग्रह किया गया है। कर्म किये बिना मनुष्य रह नहीं सकता, इसलिए कर्म तो करना ही है, कर्म अर्थात् प्रकृति के अनुसार नियत किया हुआ कर्म, धर्म–कर्म, प्रोपकार–कर्म आदि । कर्मफल की इच्छा का त्याग और आसक्ति रहित होकर किया हुआ कर्म बन्धन कारक नहीं होता । उलटे मोक्षप्रद बनता है । इसलिये जितने बन सकें उतने जीवन में इस प्रकार के कर्म किये जाओ । ऐसे कर्म में बहुत बल है ।

१०३– शरीर (स्थूल) तो जड़ है, विकारी है, नाशवान है और आत्मा चेतनस्वरूप सदा निर्विकार, नित्य और अविनाशी है, फिर यह गड़बड़ झाला किसको लेकर है ? चित्तको लेकर। चींटी से लेकर ब्रह्मातक सब शरीरों के चित्त त्रिगुणमय होते हैं । उनमें किसी में सत्वगुण अधिक किसी में रजोगुण अधिक और किसी में तमोगुण अधिक होता है । इन तीन गुणों वाले जीवों के कल्याण के लिये तीन श्रेयके मार्ग शास्त्रों में बतलाए गए हैं – कर्ममार्ग, उपासना (भक्ति) मार्ग और ज्ञानमार्ग । प्रत्येक साधक को अपने कल्याण के लिये कर्म, भक्ति और ज्ञान में से एक को मुख्य और दूसरे दोनों को गौणरूप से निश्चय करना चाहिए । निष्कामभाव से केवल भगवत्–प्राप्ति के लिये इन तीनों मार्गों का सेवन करने वाला साधक प्रभु को प्राप्त करता है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१०४– भक्ति से हीन होकर जप, तप, पूजा, पाठ, यज्ञ, दान, अनुष्ठान आदि कैसे भी सत्कर्म क्यों न किये जायें, सभी व्यर्थ हैं ।

सबके आगे पीछे वे ही श्री हरि हैं । उनके सिवा प्राणियों का दूसरा आश्रय हो ही नहीं सकता । प्राणिमात्र के आश्रय वे ही हैं । उनके स्मरण से सबका कल्याण होगा । करुणामय श्रीहरि सबका भला करते हैं । जो उनकी शरण में पहुँच जाता है, उसके पाप रहते ही नहीं।

१०५– ज्ञानी, तपस्वी, शूर, कवि, पण्ड़ित, गुणी कौन है इस संसार में जिसे मोहने भरमाया नहीं, काम ने नचाया नहीं । यह जगत् तो काजल की कोठरी है, कलंक से बचने का बस, एक ही उपाय है भगवान् का सतत् स्मरण ।

संसार के समस्त राग–द्वेषको मिटाकर मनुष्य प्रभु–प्रेम और हृदय की सच्ची प्रार्थना की साधना करे ।

१०६– चार बातों को सदा याद रखो

– बड़े–बूढ़ों का आदर करना, छोटों की रक्षा और उनपर स्नेह करना, बुद्धिमानों से सलाह लेना और मूर्खों के साथ कभी नहीं उलझना ।

– चार अवस्थाओं में आदमी बिगड़ता है ।
जवानी, धन, अधिकार और अविवेक ।
अतः इनमें सावधान रहें ।

– चार चीज़ें बड़े भाग्य से मिलती हैं ।
भगवान को याद रखने की लगन, संतों की संगति, चरित्र की निर्मलता और उदारता ।

– चार गुण दुर्लभ हैं – धन में पवित्रता, दान में विनय, वीरता में दया और अधिकार में निराभिमानिता ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- चार चीज़ों पर भरोसा मत करो – बिना जीता हुआ मन, शत्रु की प्रीति, स्वार्थी की खुशामद और बाज़ारू ज्योतिषियों की भविष्य–वाणी ।
- चार चीज़ों पर भरोसा रखो – भगवान्, सत्य पुरुषार्थ और स्वार्थहीन मित्र ।
- चार चीज़ें जाकर फिर नहीं लौटतीं – मुँह से निकली हुई बात, छूटा हुआ तीर, बीती हुई उम्र और मिटा हुआ ज्ञान ।
- चार को सदा याद रखो – दूसरों के द्वारा किया हुआ उपकार, अपने द्वारा किया हुआ अपकार, मृत्यु और भगवान् ।
- चार चीज़ें अपने आप आती हैं – सुख, दुःख जीविका और मृत्यु ।
- चार का परिचय चार अवस्थाओं में मिलता है – दरिद्रता में मित्र का, निर्धनता में स्त्री का, रण में शूरवीर का और बदनामी में बन्धु – बान्धवोंका ।
- क्रोध चार प्रकार का है – लोहे में लकीर–सा, पत्थर में लकीर सा, बालू में लकीर–सा, पानी में लकीर–सा ।

लोहे में लकीर सा–तामसी मनुष्यों का होता है, जो जन्म जन्मान्तर तक चलता है । पत्थर में लकीर सा राजसी पुरुषों का होता है जो कुछ दिनों में मिट जाता है। बालू में लकीर–सा सात्विक पुरुषों का होता है जो हवा के झोंके से तुरंत नष्ट हो जाता है और पानी में लकीर–सा संतों का होता है, जो आता–सा दीखता है पर वास्तव में होता नहीं ।

पापों से निवृत्ति के साधन :-

१०७– पाखण्डियों से अलग रहना, अहंकारी मनुष्यों से दूर रहना, केवल कल्याण के मार्ग पर चलना, असत्य का त्याग करना, भगवान की ओर बढ़ना, नालायक के साथ नालायकी न करना, अधर्म, अनीति और पापकर्मों को छोड़ने की दृढ़ प्रतिज्ञा करना, और किये हुए पापों को नष्ट करने के लिये योग्य प्रायश्चित करना ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१०८— प्रसन्नता, आत्मानुभव, परमशन्ति, तृप्ति, आनन्द और परमात्मा में स्थिति—ये विशुद्ध सत्वगुणके धर्म हैं । इनसे मुमुक्षु पुरुष नित्यानन्द प्राप्त करता है ।

१०९— इन्द्रियों को वश में रखना, जीभ को काबू में रखना, सत्कार्य में दृढ़ संकल्प रहना और भगवान् की इच्छापर खुश रहना, चाहे वह तुम्हारे प्रतिकूल ही क्यों न हो, बस, यही सच्ची शूरता है ।

११०— दया, नम्रता, दीनता, क्षमा, शील और संतोष—इन छः को धारण करके जो भगवान् को स्मरण करता है वह निश्चय ही मोक्ष पद पालेता है।

१११— धन, वैभव, कुटुम्ब, विद्या, दान, रूप, बल और कर्म आदि के गर्व से अन्धे होकर दुष्ट लोग भगवान् और भगवान् के भक्त महात्माओं का तिरस्कार किया करते हैं ।

११२— मनुष्य का अपना क्या है ?

जन्म दूसरे ने दिया, नाम दूसरे ने दिया,
शिक्षा दूसरे ने दी, रिश्ता भी दूसरे से जुड़ा,
काम करना भी दूसरे ने सिखाया,
अन्त में शमशान भी दूसरे ले जायेंगे ।
तुम्हारा इस संसार में क्या है, जो तुम घुमंड़ करते हो ?
अपनी उम्र और पैसों पर कभी ''घुमंड़'' मत करो क्योंकि जो चीज़ें गिनी जा सकें वो यकीनन खत्म हो जाती हैं ।

११३—''जीवन में चार चीज़ें मत तोड़ो : विश्वास, रिश्ता, हृदय, वचन—क्योंकि जब यह टूटते हैं तो कोई आवाज़ नहीं होती । लेकिन दर्द और कष्ट बहुत होता है ।''

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

११४—चूहा अगर पत्थर का हो तो सब उसे पूजते हैं मगर ज़िन्दा हो तो मारे बिना चैन नहीं लेते हैं ।

सांप अगर पत्थर का हो तो सब उसे पूजते हैं,
मगर ज़िन्दा हो तो उसी वक्त मार देते हैं ।
माँ—बाप अगर तस्वीरों में हों तो सब पूजते हैं,
मगर जिन्दा हों तो कीमत नहीं समझते ।

बस यही समझ नहीं आता कि ज़िन्दगी से इतनी नफरत क्यों और पत्थरों से इतनी मुहब्बत क्यों ?

जिस तरह लोग मुर्दे को कंधा देना पुण्य समझते हैं, काश इसी तरह ज़िन्दा इंसान को सहारा देना पुण्य समझने लगें तो ज़िन्दगी आसान हो जायेगी। एक बार ज़रूर सोचें ।

११५—समर्थन और विरोध केवल विचारों का होना चाहिये, किसी व्यक्ति का नहीं । क्योंकि अच्छा व्यक्ति भी गलत विचार रख सकता है और किसी बुरे व्यक्ति का भी कोई विचार सही हो सकता है ।

११६—'अहम्' से ऊँचा कोई 'आसमान नहीं । किसी की 'बुराई' करने जैसा 'आसान' कोई काम नहीं । स्वयं को पहचानने से अधिक कोई 'ज्ञान' नहीं । और 'क्षमा' करने से बड़ा कोई 'दान' नहीं ।

११७—सोच का प्रभाव मन पर होता है ।
मन का प्रभाव तन पर होता है ।
तन और मन दोनों का प्रभाव सारे जीवन पर होता है ।
हंसते मुस्कुराते रहें ।

११८—जहाँ सूर्य की किरण हो वहीं प्रकाश होता है ।
जहाँ भगवान के दर्शन हों वहीं भव पार होता है ।
जहाँ संतों की वाणी हो वहीं उद्धार होता है । और
जहाँ प्रेम की भाषा हो, वहीं परिवार होता है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

११९—वक्त के भी अजीब किस्से हैं,
किसी का कटता नहीं और किसी के पास होता नहीं । पर बहुत कुच्छ दिखा देता है ।
अपनापन तो हर कोई दिखाता है
पर अपना कौन है ये वक्त दिखाता है ।

१२०—जो बदला जा सके, उसे बदलिए, जो बदला ना जा सके उसे स्वीकारिये, जो स्वीकारा ना जा सके, उससे दूर हो जाइए, लेकिन खुद को खुश रखिये, क्योंकि वह भी आपकी बड़ी ज़िम्मेदारी है ।

१२१—जिस घर में भाइयों में प्रेम और बड़ों का आदर होता है वहीं ईश्वर का निवास होता है । प्यार बांटा तो रामायण लिखी गई और सम्पत्ति बांटी तो महाभारत लिखी गई । इन्सान का पतन उस समय शुरु हो जाता है जब वह अपनों को गिराने की सलाह गैरों से लेना शुरु कर देता है ।

१२२—सदा उनके कर्ज़दार रहिये जो आपके लिए खुद का वक़्त नहीं देखता और सदा ही उनके वफादार रहिये जो व्यस्त होने के बावजूद आपके लिए वक़्त निकालते हैं ।

१२३—किसी ने पूछा, जीवन क्या है ?
उत्तम उत्तर :—
जब मनुष्य जन्म लेता है तो उसके पास सांसें तो होती हैं पर कोई नाम नहीं होता । और जब मनुष्य की मृत्यु होती है तो उसके पास नाम तो होता है पर सांसें नहीं होतीं ।
इसी सांसों और नाम के बीच की यात्रा को 'जीवन' कहते हैं । न किसी के अभाव में जियो, न किसी के प्रभाव में जियो, यह ज़िन्दगी है आपकी, अपने स्वभाव में जियो ।

१२४—जीवन में राहत भी अपनों से मिलती है, चाहत भी अपनों से मिलती है । अपनों से कभी रूठना नहीं क्योंकि मुस्कुराहट भी सिर्फ अपनों से ही मिलती है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१२५—'ज्ञान' 'धन' और 'विश्वास' तीनों बड़े अच्छे दोस्त थे । तीनों में बहुत प्यार भी था । एक समय आया, जब तीनों को जुदा होना पड़ा । तीनों ने एक दूसरे से सवाल किया कि हम कहाँ मिलेंगे ?

ज्ञान ने कहा मैं मंदिर, विद्यालय में मिलूँगा । धन ने कहा मैं अमीरों के पास मिलूँगा । विश्वास चुप था, दोनों ने चुप रहने की वजह पूछी तो विश्वास ने रोते हुए कहा, मैं एक बार चला गया तो, फिर कभी नहीं मिलूँगा ।

१२६—दर्द कितना खुशनसीब है जिसे पाकर लोग अपनों को याद करते हैं, दौलत कितनी बदनसीब है जिसे पाकर लोग अक्सर अपनों को भूल जाते हैं ।

कितना अजीब है साहिब, ८४ लाख जीवों में एक मानव ही धन कमाता है । अन्य कोई जीव कभी भूखा नहीं मरा और मानव का कभी पेट नहीं भरा ।

१२७—वक़्त से ज़्यादा ज़िंदगी में अपना और पराया कोई भी नहीं होता । वक़्त अपना होता है तो सब अपने होते हैं और जब वक़्त खराब हो तो अपने भी पराए हो जाते हैं ।

१२८—जब परिवार के सदस्य अप्रिय लगने लगें, और पराये लोग अपने लगने लगें, तो समझ लीजिये विनाश का समय आरम्भ हो चुका है ।

१२९—सत्य की इच्छा होती है कि सभी उसे जान लें और असत्य को हमेशा भय रहता है कि कोई उसे पहचान न ले ।

१३०—हे ईश्वर

तेरी इस दुनियां में ये मंज़र क्यों है ?
कहीं अपनापन तो कहीं पीठ में खंजर क्यों है ?
सुना है तू हर ज़र्रे में है रहता,
फिर ज़मी पर कहीं मस्जिद कहीं मंदिर क्यों है ?
जब रहने वाले दुनियां के हर बन्दे तेरे हैं,
फिर कोई दोस्त तो कोई दुश्मन क्यों है ?
तू ही लिखता है हर किसी का मुकदर,
फिर कोई बदनसीब, कोई मुकदर का सिकंदर क्यों है ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१३१—सच्चा साथी प्यार करता है, सलाह देता है तथा सुख—दुःख में सहयोग भी देता है । इसके अलावा वह शक्ति और सुरक्षा भी दे और प्रत्युपकार की ज़रा भी अपेक्षा न रखे तो वह सोने पर सुहागा हो जायेगा। ईश्वर ऐसा ही साथी है । ईश्वर को जिसने जीवन का सहचर बनाया उसे सन्त ज्ञानेश्वर की तरह पूरा विश्व अपना ही घर लगता है ।

१३२—जीवन में 'परेशानियां' चाहे जितनी भी हों, चिंता करने से और बड़ी हो जाती हैं । खामोश होने से काफी कम हो जाती हैं । सब्र करने से खत्म हो जाती हैं और परमात्मा का शुक्र करने से 'खुशियों' में बदल जाती हैं ।

१३३—हम तो खुशियाँ उधार देने का कारोबार करते हैं, साहब ! कोई वक़्त पर लौटाता नहीं इसीलिए घाटे में चल रहे हैं । ज़िन्दगी के सफर से बस इतना ही सबक सीखा है, सहारा कोई—कोई ही देता है, धक्का देने को हर शख्स तैयार बैठा है ।

१३४—वो रिश्ते बड़े प्यारे होते हैं, जिनमें न हक़ हो, न शक हो, न अपना हो, न पराया हो, न जात हो, न जज़बात हो । सिर्फ अपनेपन का एहसास हो ।

१३५—अनुपयोगिता से लोहा ज़ंग खा जाता है । स्थिरता से पानी अपनी शुद्धता खो देता है । इसी तरह निष्क्रियता मस्तिष्क की ताकत सोख लेती है । इसलिए जीवन में निरंतर सक्रिय रहें । अत: 'सत्कर्म ही जीवन है' ।

१३६—स्वर्ग में सब कुछ है लेकिन मौत नहीं है ।
गीता में सब कुछ है लेकिन झूठ नहीं है ।
दुनिया में सब कुछ है लेकिन किसी को सुकून नहीं है ।
और आज के इंसान में सब कुछ है लेकिन सब्र नहीं है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१३७— राजा भोज के दस सवाल और कवि कालीदास जी के उत्तर :—

१. दुनिया में भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना क्या है ? उत्तर—'माँ'

२. सर्वश्रेष्ठ फूल कौन सा है ? उत्तर—'कपास का फूल'।

३. सर्वश्रेष्ठ सुगंध कौन सी है ?
उत्तर— 'वर्षा से भीगी मिटटी की सुगंध'।

४. सर्वश्रेष्ठ मिठास कौन सी है ? उत्तर—'वाणी की मिठास'।

५. सबसे काला क्या है ? उत्तर—'कलंक'।

६. सर्वश्रेष्ठ दूध कौन सा है ? उत्तर—'माँ का'।

७. सबसे भारी क्या है ? उत्तर—'पाप'।

८. सबसे सस्ता क्या है ? उत्तर—'सलाह'।

९. सबसे महंगा क्या है ? उत्तर—'सहयोग'।

१०. सबसे कड़वा क्या है ? उत्तर—'सत्य'।

१३८— अकेले हो — परमात्मा को याद करो।
परेशान हो — ग्रँथ पढ़ो।
उदास हो — कथाएं पढ़ो।
टेन्शन में हो — भगवत् गीता पढ़ो।
फ्री हो — अच्छी चीज़ें फारवर्ड करो।

१३९—हिन्दु ग्रँथ रामायण, गीता आदि को पढ़ने, सुनने से कैन्सर नहीं होता है बल्कि कैन्सर हो भी तो वो खत्म हो जाता है।

व्रत, उपवास रखने से तेज बढ़ता है, सर दर्द और बाल गिरने से बचाव होता है।

आरती के दौरान ताली बजाने से दिल मज़बूत होता है।

१४०—अच्छे के साथ अच्छा बने,
पर बुरे के साथ बुरे नहीं।
क्योंकि
हीरे से हीरा तो तराशा जा सकता है लेकिन कीचड़ से कीचड़ साफ नहीं किया जा सकता। कोई मेरा बुरा करे वो कर्म उसका, मैं किसी का बुरा न करूँ यह धर्म मेरा।

१४१—हृदय से अच्छे लोग 'बुद्धिमान' होने के बाद भी 'धोखा' खा जाते हैं क्योंकि वो 'दूसरों' को भी हृदय से 'अच्छे' होने का 'विश्वास' कर बैठते हैं।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१४२—अहंकार में डूबे इंसान को न तो खुद गलतियाँ दिखाई देती हैं और न दूसरों की अच्छी बातें । जो व्यक्ति अहंकार, मद, लोभ आदि में डूबा रहता है उसे स्वयं की गलतियाँ कभी नहीं दिखाई देतीं । लोग उससे कितनी भी अच्छी बातें कर लें वह उसको व्यर्थ और बेकार ही समझता है। ज्ञानी जन ऐसे व्यक्तियों से सदैव दूरी बनाकर रखते हैं ।

१४३—जिस घर के इंसान अपने सतगुरु जी का हर पल शुक्रिया अदा करते रहते हैं वहां बरकत ही बरकत होती है और जहाँ केवल शिकवे ही शिकवे हों वहाँ आयी हुई बरकत भी वापस चली जाती है । अत: हर घड़ी, हर पल दोनों हाथ जोड़ कर शुक्रिया अदा करें ।

१४४—मेहमान देख कर मान और सम्मान बदल जाते हैं । चढ़ावा कम हो तो आशीष और वरदान बदल जाते हैं । वक्त पर मन की मनोकामना पूर्ण अगर न हो तो, भक्तों की भक्ति, मन्दिर और भगवान बदल जाते हैं ।

१४५—मनुष्य को धोखा मनुष्य नहीं देता है बल्कि वो उम्मीदें धोखा दे जाती हैं जो वो दूसरों से रखता है ।

ये ज़िन्दगी तमन्नाओं का गुलदस्ता ही तो है, कुछ महकती हैं, कुछ मुरझ़ाती हैं और कुछ चुभ जाती हैं ।

१४६—खुद से बहस करोगे तो सारे सवालों के जवाब मिल जाएंगे ।

अगर दूसरों से करोगे तो और नये सवाल खड़े हो जायेंगे ।

जब मनुष्य अपनी गलती का वकील और दूसरों की गलतियों का जज बन जाता है तो फैसले नहीं फासले हो जाते हैं ।

१४७—वृद्ध अतीत में जीता है इसलिए निराश रहता है ।

युवा भविष्य में जीता है इसलिए परेशान रहता है ।

बच्चा वर्तमान में जीता है इसलिए प्रसन्न रहता है ।

इसलिए सदैव वर्तमान में जियें और प्रसन्न रहें ।

१४८—'अभिमान' की ताकत फरिश्तों को भी शैतान बना देती है। लेकिन 'नम्रता' भी कम शक्तिशाली नहीं है। वह साधारण इंसान को भी 'फरिश्ता' बना देती है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१४९—इज़्ज़त पर कोई डिस्काउँट नहीं होता, जब मिलती है तो पूरी मिलती है और जब जाती है तो पूरी ही चली जाती है । क्योंकि तूफान में किश्तियाँ और अभिमान में हस्तियाँ डूब ही जाती हैं । एवं खाली हाथ आया हुआ इंसान अपनों के लिए बहुत कुछ छोड़ता है, लेकिन खुद खाली हाथ ही वापस चला जाता है ।

१५०—मूर्खों का संग न करना, विद्वानों का संग करना और पूजनीय पुरुषों का सत्कार करना उत्तम और शुभ कारक कर्म हैं । मन, वचन और शरीर से पूर्ण रूप से संयमी रहना ही ब्रह्मचर्य है । धन की तीन गतियाँ हैं—दान, भोग और नाश । जो मनुष्य न तो दान देता है और न भोगता है, उसके धन का नाश हो जाता है ।

१५१—पापों के कटने के लक्षण ये हैं —

१. पाखण्ड़ियों से अलग रहना,
२. असत्य का त्याग करना,
३. अहंकारी मनुष्यों से दूर रहना,
४. भगवान की तरफ आगे बढ़ना,
५. केवल कल्याण के ही मार्ग पर चलना,
६. अधर्म, अनीति और पापकर्मों को छोड़ने की दृढ़ प्रतिज्ञा करना,
७. किए हुए पापों को नष्ट करने के लिये योग्य प्रायश्चित करना और नालायक के साथ नालायकी न करना ।

१५२—लोभ महापाप की खान है । अधर्मी झूठ, लोभ का मन्त्री है, तृष्णा स्त्री है, जो उसे अन्धा कर देती है, लोभ से मनुष्य को न तो उन्नति अवनति का पता रहता है और न काल का भय । जो मनुष्य पाप के द्वारा कुटुम्ब का भरण—पोषण करता है, उसको महाघोर अन्धतामिस्र नामक नरक में जाना पड़ता है । उस नरक को भोगने के बाद वह और भी नीची योनियों में जाकर भाँति—भाँति के कष्ट भोगता है, फिर जब पाप का फल भोग कर शुद्ध होता है, तब उसे मनुष्य—योनि मिलती है ।

१५३—दया, नम्रता, क्षमा, शील, दीनता और संतोष इन छः को धारण करके जो भगवान को स्मरण करता है वह निश्चय ही मोक्ष पाता है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१५४—बुरे समय में दिलासा देने वाला अजनबी ही क्यों ना हो दिल में उतर जाता है। और बुरे समय में किनारा करने वाला अपना ही क्यों न हो दिल से उतर जाता है । केवल रक्त सम्बंध से ही कोई अपना नहीं होता। प्रेम, सहयोग, विश्वास, निष्ठा, सुरक्षा, सहानुभूति और सम्मान ये सभी ऐसे भाव हैं जो परायों को भी अपना बनाते हैं ।

१५५—जिसे दुनियाँ स्वार्थी, कपटी, दंभी, दुःखमय, कलुषित, दुर्गुणी, असभ्य दिखाई पड़ती है, समझ लीजिए कि इसके अन्तर में इन्हीं अवगुणों का बाहुल्य है । दुनियाँ एक लम्बा चौड़ा बहुत बढ़िया बिल्लौरी काँच का चमकदार दर्पण है, इसमें अपना मुँह हूबहू दिखाई पड़ता है । जो व्यक्ति जैसा है इसके लिए त्रिगुणमयी सृष्टि में से वैसे ही तत्व निकल कर आगे आ जाते हैं ।

१५६—खामोश चेहरे पर हज़ारों पहरे होते हैं ।
हँसती आँखों में भी ज़ख्म गहरे होते हैं ।
जिनसे अक्सर रूठ जाते हैं हम,
असल में उनसे ही रिश्ते ज़्यादा गहरे होते हैं ।
ये दोस्ती का बंधन भी बड़ा अजीब है,
मिल जाए तो बातें लम्बी
बिछुड़ जाए तो यादें लम्बी ।

१५७—यदि 'ज्ञान' के बाद 'अहंकार' का जन्म होता है तो वो ज्ञान 'ज़हर' है । और यदि 'ज्ञान' के बाद 'नम्रता' का जन्म होता है तो वो ज्ञान 'अमृत' है ।

१५८—प्रतिभा ईश्वर से मिलती है नतमस्तक रहें । ख्याति समाज से मिलती है आभारी रहें लेकिन मनोवृत्ति और घमंड स्वयं से मिलते हैं सावधान रहें ।

१५९—सुख क्या है ?

सुख—सुविधाएँ प्राप्त हों, चाहे सब चली जाएं फिर भी अंतःकरण में हलचल न हो, अपना स्वरूप ज्यों का त्यों है ऐसा ज्ञान बना रहे वह वास्तविक सुख है, वास्तविक ज्ञान है, वास्तविक रस है, वास्तविक भगवत्प्राप्ति है ।

१६०—वे लोग तीन गुण भाग्यशाली हैं जिन्हें अमूल्य मानव—तन के साथ—साथ ईश्वरकृपा ने सत्संग की उपलब्धि कराकर मोक्ष पाने की तीव्र लगन दी है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१६१—आप व्यवहार करते समय सबसे अपनापन रखें क्योंकि सुखी जीवन के लिए विशुद्ध, नि:स्वार्थ प्रेम ही असली खुराक है । संसार इसी की भूख से मर रहा है । अत: अपने हृदय के आत्मिक प्रेम को हृदय में ही मत छिपाकर रखो, उदारता के साथ उसे बांटो । इससे जगत का बहुत सा दु:ख दूर हो जायेगा ।

१६२—लज्जा : बुरा कर्म करने में शर्म आए उसको लज्जा बोलते हैं । बुरे काम में, बुरे भोजन में, बुरा मज़ा लेने में लज्जा आए तो समझो लज्जा सार्थक हो गई ।

१६३—श्रीमान कौन है ?

जो संतुष्ट रहे, अंतरात्मा में तृप्त रहे वही वास्तव में श्रीमान है, धनवान है ।

१६४—प्रेम : शुद्ध प्रेम गुरु और शिष्य, माँ व बालक, भक्त व भगवान को आपस में जोड़ता है । ईश्वर जीवमात्र को प्रेम, आनंद तथा माधुर्य प्रदान करता है, प्रेम कभी माँ बनकर उँगली पकड़ कर जीवन—पथ पर चलना सिखाता है, पिता बनकर जीवन को नियंत्रित—अनुशासित करता है । कभी मित्र बनकर बांह पकड़ लेता है तो कभी बन्धु बनकर सुरक्षा—कवच प्रदान करता है ।

१६५—जीवन बहुत छोटा है, उसे जियो ।
प्रेम दुर्लभ है, उसे पकड़ कर रखो ।
क्रोध बहुत खराब है, उसे दबा कर रखो ।
भय बहुत भयानक है, उसका सामना करो ।
स्मृतियाँ बहुत सुखद हैं, उन्हें संजोकर रखो ।

१६६—''भरोसा'' जितना ''कीमती'' होता है
''धोखा'' उतना ही ''महंगा'' हो जाता है
फूल कितना भी सुन्दर हो
तारीफ ''खुशबू'' से होती है
इंसान कितना भी बड़ा हो
''कद्र'' उसके ''गुणों से होता है ।

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Brilliant Thoughts

Life can be happier & stress free
if we remember one simple thought;
"We can't have all that we DESIRE,
But God will give us all we DESERVE"

Life is a journey with problems to solve
and lessons to learn but most of
all experiences to enjoy

The secret to living well and longer is
eat half, walk double,
laugh triple and love without measure.

5 Tips To Live A Happier Life

1. *Love yourself* 2. *Do good* 3. *Always forgive*
4. *Harm no one* 5. *Be positive*

Kindness is more than an attitude,
an expression, a look, a touch.
It is anything that lifts another person (Plato)

Forgiveness is the most powerful thing you
can do for yourself on the spiritual path.
If you can't learn to forgive, you can
forget about getting to higher levels of awareness.
Affirm : I forgive everyone including myself.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Pain is a sign that you are alive,
Problem is a sign that you are strong.
Prayer is a sign that you are not alone

God is the best listener,
You don't need to shout,
No cry out loud,
Because he hears even
The very silent prayer of a sincere heart.

Life is never without a need,
Life is never without a problem,
Life is never without a hurtful moment,
But never forget that we have a loving GOD
Who is protecting, guiding & helping us
to attain a meaningful life.

"Life is not about the people who are
sincere in front of you.
Life is about those who are honest behind you"

Successful people always have two things
on their lips, silence and a smile.
Smile to solve problems and silence
to avoid problems.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Lesson of Time (KARMA)

When a bird is alive, it eats Ants.
When a bird is dead, Ants eat the bird.
Time and circumstances can change at any time.
Don't devalue or hurt anyone in life.
You may be powerful today.
But remember, time is more powerful than you !
One tree makes a million match sticks, Only one match stick needed to burn a million trees.
So, be good and do good

The greatest mistake we humans make in our relationships; We listen half, understand quarter, think zero and react double.

Life has five pillers
Family, Friends, Kindness, Honesty and Humanity
But the foundation is always love.

Forgiveness is a strange medicine.
If you give it to others, it heals the wounds in your heart.

Life is a journey with problems to solve and lessons to learn but most of all experiences to enjoy.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Mind is not a dustbin to keep anger, hatred and jealous. But it is the treasure box to keep, love, happiness and sweet memories.

Every phase in our life is bound to teach us something valueable but it depends on us whether we analyse the lessons or just turn the pages.

A beautiful life does not just happen.
It's built daily with love, laughter, sacrifice, patience, grace and forgiveness.

Happiness keeps you sweet !!
Trails keep you strong !!
Sorrows keep you Human !!
Failure keeps you Humble !!
Success keeps you Glowing !!
But only, Faiths keep you going !
Live simply, walk humbly,
And love genuinely.

Education is not a name of any degree or Certificate that can be shown to others as a proof. Education is the name of our Attitude, Actions, Language and behaviour with others in real life.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Life is a fingerprint that cannot be duplicated. So make the best impression with it, live it, love it and don't waste a single moment in your life because time has no holiday, dreams have no expiry date and life has no pause button.
So, let go of what's gone, be greateful for what remains and look forward to what is coming next.

Life can be full of unexpected things, either happy or sad, but no matter what happens. Just keep a loving heart, a wise mind, and a strong Faith in God He will always stay with us through all the journey of our life.

Some people hurt by words, some by action and some by silence. But the biggest hurt is that someone ignoring us when we value them a lot.

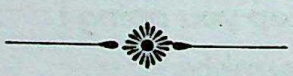

- The richest wealth is Wisdom.
  The strongest weapon is patience.
  The best security is faith
  The greatest tonic is Laughter.
  Surprisingly all are free

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- A good life is when you Assume nothing,
  Do more, Need less,
  Smile often, Dream big,
  Laugh a lot and realize how
  blessed you are for what you have
  Doing good for others is not a duty
  It's a joy. It increases your own
  health and happiness

- One minute of anger weakens the
  immune system for **5** hours.
  One minute of laughter strengthens the
  immune system for **24** hours.

- Smile is the electricity & life is a Battery,
  Whenever you smile, the Battery Gets charged
  and A beautiful day is activated. So, keep
  smiling every moment.

- Life is a collection of moments.
  Some Happy, Some Sad
  A meaningful life is not being rich,
  being popular, being highly educated, or
  being perfect.
  It's about being real, being humble,
  being able to share ouerselves and touch
  the lives of others.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- Health does not always come from medicine
  Most of the time it comes from Peace of mind, peace in the heart, peace of soul.
  It comes from laughter and love.

- Beware of ego. It's a double edged sword.
  The outer edge cuts your popularity,
  while the inner edge cuts your purity.

- Respect is the most important element of your personality. It is like an investment.
  Whatever we give to others, it will return to us with profit.
  A beautiful soul loves without condition, talks without bad intention, gives without a reason and most of all cares for people without any expectation.

- When we are wrong and we surrender,
  It means we are honest.
  When we are in doubt and we surrender,
  it means we are wise.
  But when we are right and we surrender,
  it means we value relations.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- Challenges make you more responsible.
  Always remember that life without struggle is a life without success.
  Don't give up and learn not to quit.

- Vision without action is merely a dream.
  Action without vision just passes the time.
  Vision with action can change the world.

- Distance never kills a relation.
  Closeness never builds a relation.
  It's the care of someone's feelings which builds faith and maintains relation.

- Feel God in every gentle touch,
  See God in every happy face,
  Hear God in every caring word.
  Receive God's blessings everyday of your life.

- Fortify yourself with a flock of friends !
  You can select them at random, write to one, dine with one, visit one, or take your problems to one. There is always at least one who will understand, inspire and give you the lift you may need at the time.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- Happiness is a perfume you cannot pour on others without getting a few drops on yourself.
  Money can't buy happiness : but it can buy you the kind of misery you prefer.
  Happiness makes up in height for what it lacks in length.
  Unhappiness is best described as the difference between our talents and our expectations.
  Action may not always bring happiness, but there is no happiness without action.
  Happiness is not the absence of conflict, but the ability to cope with it.
  Happiness is not in our cercumstances, but in ourselves.
  One of the keys to happiness is a bad memory.
  It isn't our position, but our disposition, that makes us happy. The days that make us happy make us wise.

- Happiness composed of misfortunes avoided.
  It is the chiefest point of happiness that a man is willing to be what he is.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- Without work all life goes rotten.
  Without victory there is no survival !
  Write it on your heart that everyday is the best day of the year.
  Minutes are worth more than money. Spend them wisely.
  Change your thoughts and you change your world.
  A true friend is the best possession.
  Happiness depends upon ourselves.
  A man of courage never wants weapons.
  I am the master of my fate:/ I am the captain of my soul.

(B.L. Chawla)

Benefits of Laughing

Reduces Heart Disease
Natural Pain Killer
Improves Breathing
Helps you loose weight
Improves your sleep
Decreases Stress
Makes you look younger

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 5321
Dated 29/3/21

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

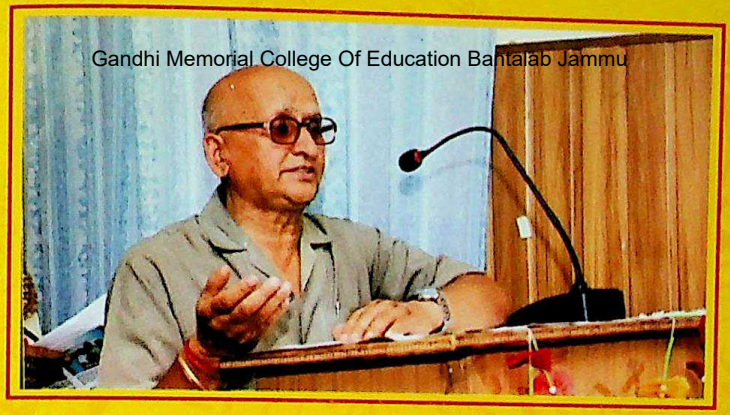

Author presenting a Bhajan in the function at Bharat Scouts and Guides Hall Gandhi Nagar, Jammu.

Sh. K L Gupta the Author being honoured by the staff and students at NITS polytechnic Miran Sahib, Jammu.

Executive Members of NGO viz Hari Prabhu Sanstha Nagrota Gujroo, presenting a cheque for Rs. 10000/- to a C.A. patient Smt. Sunita Devi at Doda Basti, Belicharana, Jammu. on 12th Feb 2021.

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

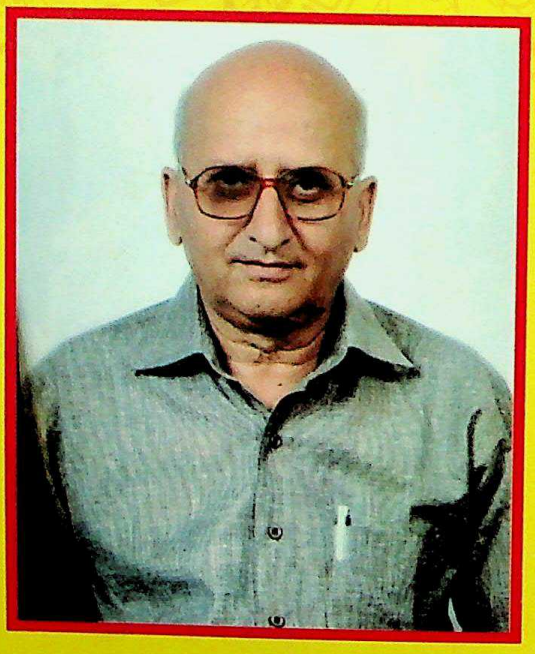

Compiler :

Kishori Lal Gupta,

M.A. B.Ed.

R/o Village Kohag, Tehsil Billawar, Distt. Kathua

Presently at :

515/4 Ganygal, Jammu

Mob.: 9419236401, 9149484659

CC-O. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh

AMBEY PRINTING PRESS # 94191 42528